लेखांकन अनुपात

5

निर्णयकों की सूचना संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यावसायिक संगठन के संदर्भ में वित्तीय सूचनाएँ प्रदान करना वित्तीय विवरणों का उद्देश्य है। वित्तीय विवरण निगम क्षेत्र के एक व्यावसायिक उद्यम द्वारा उपयोगकताओं के लिए प्रकाशित और उपलब्ध कराए जाते हैं। ये विवरण वित्तीय आँकड़ें उपलब्ध कराते हैं जिन्हें विश्लेषण तुलनात्मकता एवं व्याख्या की आवश्यकता होती है ताकि वित्तीय सूचनाओं के बाहरी उपयोगकर्ताओं के साथ-साथ आंतरिक उपयोगकर्ता भी निर्णय ले सकें। इस कार्य को वित्तीय विवरण विश्लेषण कहते हैं जिसे लेखांकन का अभिन्न एवं महत्त्वूपर्ण हिस्सा माना जाता है। जैसा कि पिछले अध्याय में संकेत दिया जा चुका है वित्तीय विवरणों की सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली तकनीकें तुलनात्मक विवरण, समरूप विवरण, प्रवृत्ति विश्लेषण, लेखांकन अनुपात तथा रोकड़ प्रवाह विश्लेषण हैं। पहले तीन के बारे में पिछले अध्याय में विस्तार से चर्चा की जा चुकी है। यह अध्याय वित्तीय विवरणों में समाहित सूचना विश्लेषण के लिए लेखांकन अनुपात की तकनीक पर है जो फर्म की ऋण शोधन क्षमता साधकता तथा लाभप्रदता के मूल्यांकन में मदद करती हैं।

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के उपरांत आप :

- *लेखांकन अनुपात के उपयोग के अर्थ, उद्देश्यों तथा विश्लेषणों की सीमाओं की व्याख्या कर सकेंगे;*
- *समान्यत: प्रयुक्त किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अनुपातों को पहचान सकेंगे;*
- *फर्म की ऋण शोधन क्षमता, द्रवता, साधकता एवं लाभप्रदता के मूल्यांकन हेतु विभिन्न अनुपातों का परिकलन कर सकेंगे; और*
- *आंतर-फर्म एवं अंतरा-फर्म की तुलना के लिए परिकलित विभिन्न अनुपातों की व्याख्या कर सकेंगे।*

5.1 लेखांकन अनुपात का अर्थ

जैसा कि पहले बताया गया है, लेखांकन अनुपात वित्तीय विवरण विश्लेषणों का महत्त्वपूर्ण साधन है। अनुपात एक गणितीय संख्या है तथा दो या दो से अधिक संख्याओं की संबद्धता से संदर्भ हेतु परिकलित किया जाता है और इसे समानुपात, प्रतिशित, आवर्त के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। जब वित्तीय विवरणों से प्राप्त किए गए दो लेखांकन अंकों को व्युत्पन्न करते हुए जब एक संख्या को परिकलित किया जाता है तब इसे लेखांकन अनुपात के नाम से जाना जाता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण के लिए, यदि एक व्यवसाय में सकल लाभ 10,000 रुपये है और बिक्री 1,00,000 रूपये है तो कहा जा सकता है कि विक्रय पर सकल लाभ 10% (10,000/1,00,000) हुआ है। इस अनुपात को सकल लाभ अनुपात कहते हैं। ठीक इसी प्रकार से माल सूची आवर्त अनुपात 6 हो सकता है जो कि विविक्षित करता है कि माल एक वर्ष में 6 बार विक्रय के लिए आवर्त हुआ है।

यहाँ पर यह अवलोकन करने की आवश्यकता है कि लेखांकन अनुपात संबंध या संबद्धता प्रदर्शित करता है। यदि वित्तीय विवरण के बीच से कोई लेखांकन संख्या निष्कर्षित की जाती है वे अनिवार्यत: प्राप्त संख्याएँ होती हैं और उनकी प्रभावोत्पादकता या सक्षमता बहुत हद तक मूलभूत संख्या पर निर्भर करती है जिससे उनका परिकलन किया गया था। यद्यपि, यदि वित्तीय विवरणों में कुछ गलतियाँ सन्निहित होती हैं तब अनुपात विश्लेषण के रूप में प्राप्त की गई संख्याओं में भी त्रुटिपूर्ण दृश्यलेख में रहेंगी। इसके अतिरिक्त एक अनुपात का परिकलन निश्चित रूप से दो संख्याओं का उपयोग करते हुए होना चाहिए जो कि परस्पर सार्थक रूप से सह संबद्ध हों। दो असंबद्ध संख्याओं का उपयोग करते हुए परिकलित किया गया अनुपात कोई भी उद्देश्य नहीं पूरा कर पाएगा। उदाहरण के लिए, यदि एक फर्नीचर का व्यवसाय 1,00,000 रूपये का है और खरीद 3,00,000 रूपये की होती है, तब फर्नीचर की खरीद का अनुपात 3(3,00,000/1,00,000) है, लेकिन क्या यह अनुपात कोई औचित्य रखता हैं। इसका कारण यह है कि इन दोनों पहलुओं के बीच कोई संबंध नहीं है।

5.2 अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य

अनुपात विश्लेषण वित्तीय विश्लेषणों द्वारा प्रकट किए गए परिणामों की व्याख्या का अपरिहार्य अंग है। यह उपयोगकर्त्ताओं को निर्णायक वित्तीय सूचनाएँ उपलब्ध कराता है और उन क्षेत्रों को इंगित करता है जहाँ छान-बीन की आवश्यकता है। अनुपात विश्लेषण एक तकनीक है जिसमें अंकगणितीय संबंधों के उपयोग द्वारा आकड़ों का पुन: समूहन सम्मिलित है, यद्यपि इसकी व्याख्या एक जटिल विषय है। इसके लिए वित्तीय विवरण की तैयारी में प्रयुक्त नियमों तथा उसके पहलू की सूक्ष्म समझ की आवश्यकता होती है। जब एक बार इसे प्रभावी ढंग से कर लिया जाता है तब यह सूचना की समृद्धि उपलब्ध कराता है जो विश्लेषक को इसमें मदद देती है-

1. व्यवसाय के उन क्षेत्रों को जानना जिन्हें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
2. उन संभावित क्षेत्रों के बारे में जानना जिन्हें अपेक्षित दिशा में प्रयासो के द्वारा बेहतर बनाया जा सकता है।
3. व्यवसाय में लाभ प्रदता, द्रवता, ऋण शोधन क्षमता तथा सक्षमता के स्तर के गहन विश्लेषण को उपलब्ध करता है।
4. सर्वोत्तम औद्योगिक मानकों के साथ निष्पादन की तुलना के द्वारा प्रतिनिधिक या समूहगत विश्लेशण करने के लिए सूचना उपलब्ध करता है।
5. भावी आकलनों एवं प्रक्षेपों को बनाने के लिए वित्तीय विवरणों से प्राप्त उपयोगितापूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध करता है।

© NCERT not to be republished

5.3 अनुपात विश्लेषण के लाभ

यदि अनुपात विश्लेषण उचित ढंग से किया जाए तो उपयोगकर्ता की समझ की सामर्थ्यता को बेहतर बनाती है जिसके साथ व्यवसाय को संचालित किया जाता है। संख्यात्मक संबद्धता व्यवसाय के अनेक अव्यक्त पहलुओं पर प्रकाश डालती है। यदि उपयुक्त विश्लेषण किया जाए, तो अनुपात व्यवसाय के विभिन्न जटिल क्षेत्रों के साथ साथ सुदृढ़ बिन्दुओं को समझने में सहायता करते हैं। जटिल क्षेत्रों का ज्ञान प्रबंध को भविष्य में और बेहतर ढंग से कार्य करने में मदद करते हैं। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि अनुपात स्वयं में साधन नहीं हैं। यह साध्य को प्राप्त करने का एक साधन हैं। इनकी भूमिका अनिवार्य रूप से निदेशात्मक हैं। अनुपात विश्लेषण के कई लाभ हैं। जिन्हें संक्षिप्त रूप से नीचे बताया गया है।

1. *निर्णयों की प्रभावोत्पादकता समझने में मदद करते हैं* – अनुपात विश्लेषण आपको यह समझने में मदद करते हैं कि क्या व्यावसायिक फर्म ने सही प्रकार की प्रचालन, निवेश एवं वित्तीय निर्णय लिए हैं या नहीं। वे संकेत देते हैं कि इन्होंने निष्पादन को सुधारने में कितनी हद तक सहायता की है।
2. *जटिल अंकों को सरल बनाते एवं संबंध स्थापित करते हैं* – अनुपात जटिल लेखांकन अंकों या आँकड़ों को सरल बनाने में तथा उनके बीच संबंधों को दर्शानें में मदद करते हैं। ये वित्तीय सूचनाओं को प्रभावी तरीके से संक्षेपीकृत करने और प्रबंधकीय सक्षमता, फर्म की उधार पात्रता एवं अर्जन क्षमता आदि का आँकलन करने मदद करते हैं।
3. *तुलनात्मक विश्लेषण में सहायक* – अनुपातों का परिकलन केवल एक वर्ष तक ही सीमित नहीं रहता है। जब कई वर्षो के आँकड़ों को अगल-बगल रखते हैं तो वे व्यवसाय में दृश्य प्रवृत्ति या झुकाव को अव्यक्त करने में व्यापक सहायता करते हैं। झुकाव या प्रवृत्ति की जानकारी व्यवसाय के बारे में प्रक्षेप बनाने में सहायता मिलती है जो कि बहुत उपयोगी विशिष्ट है।
4. *समस्या क्षेत्रों की पहचान* – अनुपात व्यवसायों में समस्या क्षेत्रों की पहचान करने के साथ-साथ सुस्पष्ट पहलुओं या क्षेत्रों को उभारने में सहायता करते है। समस्या क्षेत्र को और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है जबकि सुस्पष्ट क्षेत्रों को परिष्कृत करने की जरूरत होगी जिससे कि बेहतर परिणाम प्राप्त हो।
5. *स्वॉट* (SWOT) *विश्लेषण को योग्य बनाते हैं* – अनुपात व्यवसाय में उभरने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करने में व्यापक हद तक सहायता करते हैं। परिवर्तन की सूचना प्रबंधन को वर्तमान भय तथा सुअवसरों को बेहतर ढंग से समझने सहायक होते हैं और व्यवसाय को अपना स्वॉट (SWOT) (अर्थात्, शक्ति, कमजोरी, अवसर एवं भय) का विश्लेषण करने के लायक बनाते हैं।
6. *विभिन्न तुलनाएँ* – अनुपात कुछ विशेष न्याय समर्थ तुलनाओं में मदद करते हैं, जो फर्म को यह मूल्यांकित करने कि कार्य निष्पादन बेहतर है या नहीं में सहायक होते हैं। इस उद्देश्य के लिए एक व्यवसाय की लाभप्रदता, ऋण शोधन क्षमता तथा द्रवता आदि की तुलना की जा सकती है। जैसे कि– (i) विभिन्न लेखांकन अवधियों में परस्पर तुलना (अंतर-फर्म तुलना तथा समय श्रृंख्ला विश्लेषण) (ii) अन्य व्यावसायिक उद्यमों के साथ (अंतर-फर्म तुलना/समूहगत विश्लेषण), और (iii) फर्म/उद्योग के लिए निर्धारित मानकों के साथ (उद्योग के मानकों या अपेक्षित मानकों तुलना करना)।

© NCERT not to be republished

5.4 अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ

चूंकि अनुपातों को वित्तीय विवरणों से प्राप्त किया जाता है, अत: मूल वित्तीय विवरण में कोई भी कमजोरियाँ अनुपात विश्लेषण से प्राप्त विश्लेषणों में भी द्रष्टिगत होंगी। इसलिए वित्तीय विवरणों की सीमाएँ भी अनुपात विश्लेषणों की सीमाएँ बन जाती हैं। यद्यपि, अनुपात की व्याख्या हेतु, उपयोगकर्ता को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वित्तीय विवरणों को तैयार करने में किन नियमों का पालन किया गया था और साथ ही उनकी प्रकृति एवं सीमितताओं को भी स्मरण रखना चाहिए। अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ, जो कि प्रथमत: वित्तीय विवरण की प्रकृति के रूप में आती हैं, निम्नानुसार हैं–

1. *लेखांकन आँकड़ों की सीमाएँ* – लेखांकन आँकड़ें परिशुद्धता और अन्तिमता हेतु अकारण छाप देते हैं। वास्तव में लेखांकन आँकड़े "अभिलिखित तथ्यों लेखांकन परम्पराओं और वैयक्तिक निर्णयों के एक समिश्रण को प्रतिबिंबित करते हैं तथा ये निर्णय एवं परम्पराएँ अनुप्रयुक्त हो कर उन्हें महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यवसाय का लाभ निवल एवं अंतिम आँकड़े नहीं होते हैं। यह केवल लेखांकन नीतियों की उपयोगिता पर आधारित लेखाकार के एक विचार मात्र होते हैं। एक निर्णय की सच्चाई या सटीकता अनिवार्यत: उन लोगों की योग्यता एवं सत्यनिष्ठा पर निर्भर करते है जो उन्हें तैयार करते हैं और उनकी निष्ठा सामान्य तौर पर स्वीकृत लेखांकन सिंद्धांतों एवं परम्पराओं के साथ होती है। इसलिए वित्तीय विवरण मसले की बिलकुल सही तस्वीर नहीं प्रस्तुत कर सकते और इस प्रकार से अनुपात भी सही तस्वीर नहीं दर्शाएंगे।
2. *मूल्य स्तर बदलावों की अपेक्षा होती है* – वित्तीय विवरण स्थिर मुद्रा मापन सिद्धांत पर आधारित होते हैं। इसकी अव्यक्तता यह मानती है कि हर स्तर में मूल्य बदलाव या तो न्यूनतम है या कोई मायने नहीं रखती है। लेकिन इसका सच कुछ अलग है। हम सामान्यत: स्फीर्तिकारी अर्थव्यवस्था में रह रहे हैं जहाँ मुद्रा की शक्ति लगातार गिर रही है। मूल्य के स्तर में एक बदलाव विभिन्न वर्षों के लेखांकन के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण अर्थहीन बना देता है। क्योंकि रिकार्ड द्रवता के मूल्य में आए परिवर्तन की अपेक्षा करता है।
3. *गुणात्मक या गैर-मौद्रिक पहलू की अपेक्षा* – लेखांकन एक व्यवसाय के मुद्रा पहलू के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यद्यपि अनुपात केवल मौद्रिक पहलू को प्रकट करता है और पूरी तरह से गुणात्मक पहलू की उपेक्षा करता है।
4. *लेखांकन व्यवहार में वैविध्यता* – यहाँ पर स्टॉक के मूल्यांकन, मूल्यह्रास के परिकलन, परिसंपतियों के निरूपण, कुछ विशिष्ट वित्तीय चरों की परिभाषा आदि के लिए विभिन्न लेखांकन नीतियों का उपयोग होता है, जबकि ये व्यवसाय के विभिन्न पहलुओं के लेन-देन के लिए उपलब्ध होते हैं। ये विभिन्नताएँ समूहगत विश्लेषण पर एक बड़ा प्रश्न चिंह लगाते हैं। चूँकि यहाँ पर विभिन्न व्यावसायिक उद्यमों द्वारा वैविध्यताओं का पालन किया जाता है। अत: उनके वित्तीय विवरणों की वैध तुलना संभव नहीं है।
5. *पूर्वानुमान* – केवल ऐतिहासिक विश्लेषणों पर भविष्य की प्रवृत्ति के बारे में पूर्वानुमान लगाना उपयुक्त नहीं है। उचित पूर्वानुमानों के लिए गैर-वित्तीय घटकों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

© NCERT not to be republished

आइए स्वत: प्रतिशत में अनुपातों की सीमाओं के बारे में बात करें। इसकी विभिन्न सीमिताएँ ये हैं–

1. *साध्य न कि साधन*– अनुपात स्वयं में साधन नहीं हैं बल्कि साध्य को प्राप्त करने का एक साधन है।
2. *समस्या समाधान की क्षमता से रहित* – इनकी भूमिका अनिवार्यत: संकेतात्मक है और एक चेतावनी सूचक है लेकिन यह किसी समस्या का हल नहीं उपलब्ध कराते हैं।
3. *मानकीकृत परिभाषा से रहित* – अनुपात विश्लेषण में प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न अवधारणाओं के लिए एक मानकीकृत परिभाषाओं का अभाव होता है। उदाहरण के लिए, तरल देयताओं की कोई मानक परिभाषा नहीं है। सामान्यत: इसके अंतर्गत सभी चालू दायित्व शामिल होती है लेकिन कई बार चालू दायित्व के अंतर्गत बैंक अधिविकर्ष नहीं शामिल होता है।
4. *सार्वजनिक स्वीकृत मानक स्तर का अभाव* – यहाँ पर कोई ऐसा सार्वजनिक मापदंड नहीं है कि आदर्श अनुपात के लिए कौन सी विशिष्टाएँ हैं। यहाँ पर सार्वजनिक स्वीकार्य स्तरों की कोई मानक सूची भी नहीं है, और भारत में, औद्योगिक औसत भी नहीं उपलब्ध है।
5. *असंबद्ध आँकड़ों पर आधारित अनुपात* – एक असंबद्ध आँकड़ों पर परिकलित अनुपात, वास्तव में एक अर्थहीन प्रयास या अन्यास है। उदाहरण के लिए, यदि एक फर्नीचर के 10,000 रूपये के लिए 1,00,000 लेनदारी है और इसे 1:1 में व्यक्त करते हैं, लेकिन यह बेकार है और सक्षमता या ऋण शोधन क्षमता के मूल्यांकन हेतु कोई औचित्यता नहीं है।

इसलिए अनुपातों का उपयोग तब सचेतना के साथ, उनकी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए जब एक संगठन के निष्पादन को मूल्यांकित किया जा रहा हो और उसके सुधार हेतु भावी कार्यनीतियों का नियोजन किया जा रहा हो।

स्वयं जाँचिये - 1

1. बताएँ कि निम्नलिखित में कौन सा कथन सही है या गलत।
   (क) वित्तीय रिपोर्टिंग का एक मात्र उद्देश्य प्रबंधकों को कार्यशीलता की प्रगति के बारे में सूचित रखना है।
   (ख) वित्तीय विवरणों में उपलब्ध कराए गए आँकड़ों के विश्लेषण को वित्तीय विश्लेषण कहा जाता है।
   (ग) दीर्घकालिक लेनदार फर्म की ब्याज भुगतान क्षमता और मूल राशि के भुगतान के प्रति सरोकार रखते हैं।
   (घ) एक अनुपात सदैव एक संख्या के द्वारा दूसरी संख्या के विभाजन के भागफल के रूप में व्यक्त किया जाता है।
   (च) अनुपात एक फर्म के विभिन्न लेखांकन अवधियों के परिणामों के साथ-साथ अन्य व्यवसायिक उद्यमों की लेखाकन अवधियों की तुलना में सहायता करता है।
   (घ) एक अनुपात मात्रात्मक एवं गुणात्मक, दोनों पहलुओं को दर्शाता है।

© NCERT not to be republished

5.5 अनुपात के प्रकार

अनुपातों के वर्गीकरण के दो प्रकार हैं – (1) परंपरागत वर्गीकरण, और (2) क्रियात्मक वर्गीकरण। परंपरागत वर्गीकरण उस वित्तीय विवरण पर आधारित होता है जो संबंधित अनुपात का निर्धारक होता है। इस आधार पर अनुपातों को निम्नवत वगीकृत किया गया है–

1. *आय विवरण अनुपात* – आय विवरण से दो चरों के एक अनुपात को आय विवरण अनुपात के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए विक्रय हेतु सकल लाभ के अनुपात को सकल लाभ अनुपात के रूप मे जानते हैं और यह आय विवरण के दोनों आँकड़ों को प्रयुक्त कर परिकलित किया गया है।
2. *तुलन पत्र अनुपात* – यदि इस प्रकरण में दोनों चर तुलन पत्र से हैं तो इसे तुलन पत्र अनुपात के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, चालू परिसंपत्तियों तथा चालू दायित्व के अनुपात को चालू अनुपात के नाम से जानते हैं। और इसे तुलन पत्र से प्राप्त दोनों आँकड़ों के उपयोग से परिकलित किया गया है।
3. *मिश्रित अनुपात* – अनुपात का परिकलन दो भिन्न चरों–अर्थात एक चर आय विवरण से लेकर तथा एक चर तुलन पत्र से लेकर किया जाता है तो उसे मिश्रित अनुपात कहा जाता है। उदाहरण के लिए, देनदार हेतु उधार विक्रय का अनुपात तथा प्राप्त बिल जिसे देनदार के आवर्त अनुपात के रूप से जानते हैं, के परिकलन में एक आँकड़ा आय विवरण से (उधार विक्रय) तथा दूसरा आँकड़ां तुलन पत्र (देनदार एवं प्राप्यबिल) से लिया जाता है।

यद्यपि लेखांकन अनुपातों का परिकलन वित्तीय विवरणों से प्राप्त आँकड़ों द्वारा किया जाता है, लेकिन वित्तीय विवरणों के आधार पर अनुपात का वर्गीकरण व्यवहार में बहुत कम प्रयुक्त होता है। यह स्मरण रहे, कि लेखांकन का आधारभूत उद्देश्य वित्तीय निष्पादन (लाभप्रदता) वित्तीय स्थिति (बुद्धिमता से मुद्रा की उगाही और निवेश की क्षमता) के साथ-साथ वित्तीय स्थिति में उत्पन्न परिवर्तन (प्रचालन स्तर में परिवर्तन के लिए संभावित व्याख्या) पर उपयोगी प्रकाश डालना। इस प्रकार से ज्ञात किये गए अनुपात के उद्देश्य पर आधारित वैकल्पिक वर्गीकरण (क्रियात्मक वर्गीकरण), क्रियात्मक वर्गीकरण, सर्वाधिक प्रयोग में लाये जाने वाला वर्गीकरण है, जिसे नीचे बताया गया है।

1. *द्रवता अनुपात* – अपनी देनदारियों को पूरा करने हेतु एक व्यवसाय को तरल निधियों की आवश्यकता होती है। व्यवसाय की अपने पणधारियों को देय राशियों को भुगतान क्षमता को द्रवता के रूप में जाना जाता है। और इसे मापने के अनुपात को दर को 'द्रवता अनुपात' के नाम से जानते हैं। ये सामान्यत: प्रकृति में अल्पकालिक होते हैं।
2. *ऋणशोधन क्षमता अनुपात*– व्यवसाय की ऋणक्षोधन क्षमता का निर्धारण पणधारियों, विशेष रूप से बाहरी पणधारियों के प्रति इसकी संविदात्मक दायित्व (दायित्वों) के पूरा करने की क्षमता से होता है तथा ऋणशोधन क्षमता की स्थिति को मापने के लिए परिकलित अनुपात को 'ऋण शोधन क्षमता अनुपात' के नाम से जानते हैं। ये अनिवार्यत: प्रकृति से दीर्घकालिक होते हैं।

© NCERT not to be republished

3. *सक्रियता अनुपात* – यह उस अनुपातों को संदर्भित करता है जिन्हें संसाधनों के प्रभावी उपयोगिता पर आधारित व्यवसाय की सक्रियता या कार्यात्मकता की क्षमता के मापन हेतु परिकलित किया जाता है। इसलिए इन्हें सक्षमता अनुपात या साधकता अनुपात के नाम से जानते हैं।
4. *लाभप्रदता अनुपात* – यह अनुपात व्यवसाय में नियोजित फंड (या परिसंपत्तियाँ) अथवा बिक्री से संबंधित लाभ के विश्लेषण के लिए प्रयोग किया जाता है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए परिकलित अनुपात को लाभप्रदता अनुपात के रूप में जानते हैं।

प्रदर्श 1

एडलर फरमास्यूटिकलस लिमिटेड

लाभप्रदता अनुपात			
	2003-04	**2004-05**	**2005-06**
PBDIT/ कुल आय	14.09	15.60	17.78
निवल लाभ/ कुल आय	6.68	7.19	10.26
रोकड़ प्रवाह/ कुल आय	7.79	8.64	12.13
निवल संपत्ति पर प्रत्याय (PAT निवल संपत्ति)	16.61	10.39	14.68
विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय (PBDIT औसत विनियोजित पूँजी)	15.40	15.33	16.17
सक्रियात्मक अनुपात	**2003-04**	**2004-05**	**2005-06**
देनदार आवर्त (दिनों में)	104	87	80
स्टॉक आवर्त (दिनों में)	98	100	96
कार्य पूँजी/ कुल पूँजी नियोजित (%)	68.84	60.04	51.11
ब्याज/ कुल आय (%)	4.48	3.67	3.14
उत्तोलन एवं वित्तीय अनुपात			
	2003-04	**2004-05**	**2005-06**
ऋण इक्विटी अनुपात	1.45	0.66	0.77
चालू अनुपात	3.50	3.72	3.58
तरल अनुपात	2.45	2.40	2.39
रोकड़ एवं तुल्यमान कुल परिसंपत्तियाँ	12.76	14.48	7.93
ब्याज व्याप्ति	3.15	4.25	4.69
मूल्यांकन अनुपात			
	2003-04	**2004-05**	**2005-06**
प्रति अंश अर्जन	15.00	12.75	21.16
प्रति अंश रोकड़ अर्जन	18.78	15.58	24.85
प्रति अंश लाभांश	3.27	2.73	2.66
अंकित मूल्य प्रति अंश	94.77	124.86	147.62
मूल्य/अर्जन	8.64	15.03	13.40

© NCERT not to be republished

5.6 द्रवता अनुपात

द्रवता अनुपात का परिकलन व्यवसाय के अल्पकालिक ऋणशोधन क्षमता के बारे में संकेत पाने हेतु किया जाता है। अर्थात चालू दायित्व को चुकाने के लिए फर्म की क्षमता जानना है। इन्हें तुलन–पत्र में चालू परिसंपत्तियों एवं चालू दायित्व की राशि को ज्ञात करने हेतु परिकलित किया जाता है। इसके अंतर्गत बैंक अधिविकर्ष, लेनदार (ऋणदाता), देय विपत्र अग्रिम प्राप्त आय, आदि आते हैं। इस श्रेणी में शामिल दो अनुपात हैं — चालू अनुपात तथा तरल अनुपात

5.6.1 चालू अनुपात

चालू अनुपात चालू परिसंपत्तियों तथा चालू दायित्व का समानुपात होता है। इसे निम्नवत् व्यक्त किया जाता है:

$$\text{चालू अनुपात} = \text{चालू परिसंपत्तियाँ: चालू दायित्व अथवा} \frac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देनदारियाँ}}$$

चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत हस्तस्थ रोकड़, बैंकस्थ रोकड़, बैंक शेष, देनदार, प्राप्य विपत्र, स्टॉक, पूर्वदत्त व्यय, प्रोद्भूत आय तथा अल्पकालिक निवेश, आदि शामिल है।

चालू दायित्व के अंतर्गत लेनदार (ऋणदाता), देय विपत्र, बकाया व्यय, कर के लिए प्रावधान, अग्रिम कर का प्रावधान, बैंक अधिविकर्ष, अल्पकालिक ऋण, अग्रिम या पेशगी प्राप्त आय, आदि शामिल हैं।

उदाहरण 1

निम्नलिखित जानकारी से चालू अनुपात का परिकलन कीजिए–

	रु.		रु.
स्टॉक	50,000	रोकड़	30,000
देनदार	40,000	लेनदार	60,000
प्राप्य विपत्र	10,000	देय विपत्र	40,000
अग्रिम कर	4,000	बैंक अधिविकर्ष	4,000

हल

चालू परिसंपत्तियाँ = 50,000 रु. + 40,000 रु. + 10,000 रु. + 4,000 रु. + 30,000 रु. = 1,34,000 रु.

चालू दायित्व = 60,000 + 40,000 + 4,000 = 1,04,000 रु.

चालू अनुपात = 1,34,000 रु. 1,04,900 रु. = 1.29 :1

महत्व– यह मापदंड उपाय या साधन के लिए एक अंश प्रदान करता है कि कौन सी चालू परिसंपत्ति, कौन सी देनदारी को आवर्त करता है। चालू दायित्व के ऊपर चालू परिसंपत्तियों का आधिक्य चालू परिसंपत्तियों एवं निधियों के प्रवाह को वसूली में अनिश्चितता के प्रति उपलब्ध सुरक्षा राशि के साधन या उपाय को उपलब्ध कराता है। यह अनुपात औचित्यपूर्ण होना चाहिए। यह न तो बहुत ऊँचा होना चाहिए और न ही बहुत निम्न। दोनों ही स्थितियाँ हानिकारक हैं। एक अति उच्च चालू अनुपात, चालू परिसंपत्तियों में उच्च निवेश की

© NCERT not to be republished

ओर संकेत करता है किन्तु अच्छा नहीं है चूँकि वह संसाधनों की अधूरी उपयोगिता और अनौचितपूर्ण उपयोगिता दर्शाता है। एक निम्न अनुपात व्यवसाय के लिए संकट की स्थिति है और इसे जोखिम झेलने जैसी स्थिति में पहुँचाता है जहाँ वह इस योग्य नहीं होगा कि अपने अल्पकालिक ऋणों का भुगतान समय पर करने के काबिल हो। यदि यह समस्या विद्यमान रही है तो यह फर्म की ऋण पात्रता पर विपरीत प्रभाव डालता है। सामान्यत: यह अनुपात 2:1 आदर्श माना जाता है।

5.6.2 तरल अनुपात

यह चालू दायित्व पर तरल परिसंपत्तियों का अनुपात है। इसे निम्नवत व्यक्त किया जाता है–

तरल अनुपात = तरल परिसंपत्तियाँ: चालू दायित्व या $\frac{\text{त्वरित परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देनदारियाँ}}$

तरल परिसंपत्तियों को उन परिसंपत्तियों के रूप में परिभाषित किया गया है, जो तुरंत ही नकदी में परिवर्तनीय हैं। जब हम तरल परिसंपत्तियों का परिकलन करते हैं तब हम स्टॉक तथा चालू परिसंपत्तियों से पूर्वदत्त व्ययों को घटा देते हैं, क्योंकि गैर–तरल चालू परिसंपत्तियों के अतिरिक्त से, इसे व्यवसाय के द्रवता स्थिति के मापन के रूप में चालू अनुपात की अपेक्षा बेहतर माना जाता है। इसे व्यवसाय की द्रवता स्थिति पर संपूरक जाँच के रूप में काम लेने के लिए परिकलित किया जाता है। इसलिए इसे साख निर्धारण अनुपात के नाम से भी जाना जाता है।

उदाहरण 2

नीचे दी गई सूचना के आधार पर तरल अनुपात परिकलित कीजिए–

हल

तरल परिसंपत्तियाँ	= चालू परिसंपत्तियाँ – अंतिम स्टॉक – अग्रिम कर
तरल परिसंपत्तियाँ	= 1,34,000 रु. – 50,000 रु. = 84,000 रु.
चालू दायित्व	= 1,04,000 रु.
तरल अनुपात	= तरल परिसंपत्तियाँ : चालू दायित्व
	= 80,000 रु. 1,04,000 रु.
	= 1:1.77

महत्व–यह अनुपात व्यवसाय को बिना किसी प्रवाह के, उसकी अल्पकालिक दायित्व को पूरा करने के लिए क्षमता को मापक उपलब्ध कराता है। सामान्यत: यह माना गया है कि सुरक्षा के लिए 1:1 अनुपात होना चाहिए क्योंकि अनावश्यक रूप से बहुत निम्न अनुपात बहुत जोखिम युक्त होता है और उच्च अनुपात यह प्रकट करता है कि कम लाभ वाले अल्पकालिक निवेशों में अन्यथा संसाधनों का फैलाव होता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 3

निम्नलिखित सूचना से द्रवता अनुपात का परिकलन कीजिए

	रु.
चालू दायित्व	50,000
चालू परिसंपत्तियाँ	80,000
स्टॉक	25,000
पूर्वदत्त व्यय	5,000
देनदार	30,000

हल

तरल परिसंपत्तियाँ	= चालू परिसंपत्तियाँ – अंतिम स्टॉक – पूर्वदत्त व्यय
	= 80,000 रु. – 25,000 रु. – 5,000 रु. = 50,000 रु.
तरल अनुपात	= तरल परिसंपत्तियाँ : चालू दायित्व
	= 50,000 रु. 50,000 रु. = 1:1.

उदाहरण 4

एक्स लिमिटेड का चालू अनुपात: 3 : 5 :1 का है और तरल अनुपात 2:1 का है। यदि तरल परिसंपत्ति पर चालू परिसंपत्ति का आधिक्य 24,000 रु. है तो चालू परिसंपत्तियाँ एवं चालू दायित्व का परिकलन कीजिए।

हल

चालू अनुपात	=	3.5:1
तरल अनुपात	=	2:1
यदि, चालू दायित्व	=	x है
चालू परिसंपत्तियाँ	=	3.5x होगी
एवं तरल परिसंपत्तियाँ	=	2x
अत:, स्टॉक	=	चालू परिसंपत्तियाँ - तरल परिसंपत्तियाँ
24,000 रु.	=	3.5x – 2x
24,000 रु.	=	1.5x
x	=	16,000 रु.
चालू परिसंपत्तियाँ	=	3.5 x = 3.5 × 16,000 रु. = 56,000 रु.
सत्यापन:		
चालू अनुपात	=	चालू परिसंपत्तियाँ : चालू दायित्व
	=	56,000 रु. 16,000
	=	3.5 : 1
तरल अनुपात	=	तरल परिसंपत्तियाँ : चालू दायित्व
	=	32,000 रु. 16,000 रु.
	=	2 : 1

not to be republished © NCERT

उदाहरण 5

निम्नलिखित सूचना से चालू अनुपात को परिकलित करें:

कुल परिसंपत्तियाँ	3,00,000 रु.	स्थिर परिसंपत्तियाँ	1,60,000 रु.
दीर्घकालिक दायित्व	80,000 रु.	निवेश	1,00,000 रु.
अंश धारक निधि	2,00,000 रु.	अभासी परिसंपत्तियाँ	शून्य

हल

कुल परिसंपत्तियाँ	=	स्थिर परिसंपत्तियाँ + निवेश + चालू परिसंपत्तियाँ
3,00,000 रु.	=	1,60,000 रु. + 1,00,000 रु. + चालू परिसंपत्तियाँ
चालू परिसंपत्तियाँ	=	3,00,000 रु. – 2,60,000 रु. = 40,000 रु.
कुल परिसंपत्तियाँ	=	कुल दायित्व(पूँजी सहित)
	=	अंश धारक + दीर्घकालिक दायित्व + चालू दायित्व
3,00,000 रु.	=	2,00,000 रु. + 80,000 रु. + चालू दायित्व
चालू दायित्व	=	3,00,000 रु. – 2,80,000 रु. = 20,000 रु.
चालू अनुपात	=	चालू परिसंपत्तियाँ : चालू दायित्व
	=	40,000 रु. 20,000 रु. = 2:1

स्वयं करें

1. चालू अनुपात = 4:5:1, तरल अनुपात = 3:1 और स्टॉक 36,000 रु. है। चालू परिसंपत्तियों एवं चालू दायित्व परिकलित करें।
2. एक कंपनी की चालू दायित्व 5,60,000 रु. हैं, चालू अनुपात 5:2 और तरल अनुपात 2:1 है। स्टॉक का मूल्य ज्ञात करें।
3. एक कंपनी की चालू परिसंपत्तियाँ 5,00,000 रु. की है। चालू अनुपात 2:5:1 तथा तरल अनुपात 1:1 का है। चालू दायित्व, तरल परिसंपत्तियों तथा स्टॉक का मूल्य परिकलित करें।

उदाहरण 6

चालू अनुपात 2:1 है। तर्क सहित व्याख्या करें कि कौन-सी लेन-देन सुधरेगी, घटेगी तथा चालू अनुपात को नहीं बदलेगी:

(क) चालू दायित्व का पुन: भुगतान
(ख) साख पर सामान की खरीददारी
(ग) एक कार्यालयी टंकण मशीन की बिक्री केवल 3,000 रु. (पुस्तक मूल्य: 40,000 रु.) में हुई;
(घ) माल की बिक्री 1,000 रु. में जबकि लागत 10,000 रु. है।
(च) लाभांश का भुगतान।

© NCERT not to be republished

हल

अनुपात में परिवर्तन मूल अनुपात पर निर्भर करता है। यदि मान लें कि चालू परिसंपत्ति 50,000 रु. की है और चालू दायित्व 25,000 रु. की है और इस तरह से चालू अनुपात 2:1 है। अब हम चालू अनुपात का दिए गए लेन-देन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

(क) माना कि 10,000 रु. लेनदारों को चेक द्वारा चुकाया गया। यह चालू परिसंपत्ति को घटाकर 40,000 रु. कर देगा और चालू दायित्व 15,000 रु. की है। अब नया अनुपात 2.67 (40,000 रु. / 15,000 रु.) होगा। इसलिए यह सुधार है।

(ख) अब मान लीजिए 10,000 रु. का सामान उधार खरीदा गया। यह चालू परिसंपत्तियों को बढ़ाकर 60,000 रु. कर देगा और चालू दायित्व 35,000 रु. हो गया। अब नया अनुपात 1.71 (60,000 रु. / 35,000 रु.) होगा। इसलिए यह ह्रास है।

(ग) एक टंकण मशीन की बिक्री के कारण (स्थिर परिसंपत्ति) चालू परिसंपत्ति बढ़कर 53,000 रु. होगी और चालू दायित्व में कोई परिवर्तन भी नहीं हुआ। नया अनुपात 2.12 (53,000 रु. / 25,000 रु.) होगा। इसलिए यह सुधार है।

(घ) यह लेन-देन स्टॉक को 10,000 रु. घटाएगा और रोकड़ में 11,000 रु. की बढ़त होगी। इस तरह से चालू परिसंपत्तियाँ, चालू दायित्व में बिना किसी परिवर्तन के 1,000 रु. की वृद्धि होगी। इस तरह से नया अनुपात 2.04 (51,000 रु. / 25,000 रु.) होगा। इसलिए यह सुधार है।

(च) मान लीजिए कि 5,000 रु. लाभांश के रूप में दिए गए। यह चालू परिसंपत्तियों को घटाकर 45,000 रु. कर देगा और चालू दायित्व में कोई बदलाव भी नहीं होगा। अब नया अनुपात 1.8 (45,000 रु. / 25,000 रु.) होगा। इसलिए यह कमी है।

5.7 ऋण शोधन क्षमता अनुपात

वे व्यक्ति जो व्यवसाय में अग्रिम धन दीर्घकालिक आधार पर लगाते हैं वे उन्हें आवधिक ब्याज के भुगतान की सुरक्षा में रुचि होने के साथ-साथ ऋण अवधि की समाप्ति पर मूलधन की राशि के पुनर्भुगतान की चिंता भी रहती है। ऋण शोधन क्षमता अनुपात का परिकलन व्यवसाय द्वारा दीर्घकाल में ऋण चुकाने की क्षमता को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। व्यवसाय की ऋण शोधन क्षमता के मूल्यांकन हेतु सामान्यत: निम्नलिखित अनुपातों को संगठित किया जाता है।

1. ऋण इक्विटी अनुपात
2. ऋण अनुपात
3. स्वामित्व अनुपात
4. ऋण हेतु कुल परिसंपत्तियाँ अनुपात
5. ब्याज व्याप्ति अनुपात

© NCERT not to be republished

5.7.1 ऋण इक्विटी अनुपात

ऋण इक्विटी अनुपात दीर्घकालिक ऋण और इक्विटी के बीच संबंधों को मापता है। यदि कुल दीर्घकालिक निधि के ऋण संघटक नियोजन लघु हैं तो बाहरी लोग अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से अधिक इक्विटी तथा कम ऋण के लाभ पूँजी ढाँचा अधिक अनुकूल माना जाता है क्योंकि यह दिवालियेपन के अवसर घटा देता है। प्राय: इसे अधिक सुरक्षित माना जाता है यदि ऋण इक्विटी अनुपात 2:1 का हो। इसे निम्नवत् संगठित किया जाता है:

ऋण इक्विटी अनुपात = दीर्घ कालिक ऋण/ अंश धारक निधि या $\frac{\text{दीर्घकालिक ऋण}}{\text{अंश धारक निधि}}$

यहाँ अंश धारक निधि (समता) = इक्विटी अंश पूँजी + आरक्षित एवं अधिशेष – आभासी परिसंपत्तियाँ + अधिमान अंश पूँजी

वैकल्पिक तौर पर इसे गैर-आभासी के रूप में परिकलित किया जा सकता है परिसंपत्तियाँ – कुल बाहरी दायित्व

दीर्घकालिक निधि = ऋण पत्र + दीर्घकालिक ऋण

महत्व– यह अनुपात एक उद्यम की ऋण ग्रस्तता के अंश को मापता है और दीर्घकालिक ऋण की सुरक्षा की व्यापकता के तहत एक अनुमान देता है। जैसा कि पहले संकेत दिया गया है कि एक निम्न ऋण-इक्विटी अनुपात अधिक सुरक्षा का दर्शाता है और दूसरी ओर एक उच्च अनुपात जोखिम पूर्ण करने में कठिनाई में डाल सकता है। हालाँकि, एक मालिक की अनुभूतिक्षमता से, इक्विटी पर ऋण व्यापार का व्यापक उपयोग उसके लिए उच्च वापसी को सुनिश्चित कर सकता है, यदि नियोजित पूँजी पर अर्जन की दर दिए जाने वाले ब्याज के अनुपात से अधिक हो। लेकिन इसे अच्छा भी माना जा सकता है और नहीं भी क्योंकि कुछ व्यवसायों में अपवाद भी होते हैं जैसे निर्धारित अनुपात 2:1 तक सीमित है। इसलिए इस अनुपात को 'उत्तोलन अनुपात' भी कहा गया है।

उदाहरण 7

निम्नलिखित सूचनाओं से ऋण इक्विटी अनुपात को परिकलित कीजिए

कुल बाहरी दायित्व	5,00,000 रु.	तुलन पत्र योग	10,10,000 रु.
चालू दायित्व	1,00,000 रु.	काल्पनिक परिसंपत्तियाँ	10,000 रु.

हल

दीर्घकालिक ऋण	=	कुल बाहरी दायित्व – चालू दायित्व
	=	5,00,000 रु. – 1,00,000 रु. = 4,00,000 रु.
कुल गैर आभासी परिसंपतियाँ	=	कुल परिसंपत्तियाँ – काल्पनिक परिसंपत्तियाँ
	=	10,10,000 रु. – 10,000 रु. = 10,00,000 रु.
अंश धारक निधि	=	गैर-अभासी कुल परिसंपत्तियाँ – कुल दायित्व
	=	10,00,000 रु. – 5,00,000 रु. = 5,00,000 रु.
	=	10,00,000 रु. – 5,00,000 रु. = 4:5.

© NCERT not to be republished

5.7.2 ऋण अनुपात

ऋण अनुपात दीर्घकालिक ऋण हेतु कुल बाहरी एवं आंतरिक निधियों (नियोजित पूँजी या निवल परिसंपत्तियों) के अनुपात को संदर्भित करता है। इसे निम्नवत् संगठित करते हैं:

दीर्घकालिक ऋण/नियोजित पूँजी (या निवल परिसंपत्तियाँ)

नियोजित पूँजी दीर्घकालिक ऋण + अंश धारक निधि के बराबर होती है। वैकल्पिक तौर पर इसे निवल परिसंपत्तियों के रूप में लिया जा सकता है जो कि कुल गैर–काल्पनिक परिसंपत्तियों – चालू दायित्व के बराबर होती है। उदाहरण 7 से लिए गए आँकड़ों से नियोजित पूँजी 4,00,000 रु. + 5,00,000 रु. = 9,00,000 रु. ठीक इसी प्रकार से, निवल परिसंपत्तियाँ यथा 10,00,000 रु. – 1,00,000 रु. = 9,00,000 रु. और ऋण अनुपात 4,00,000 रु. – 9,00,000 रु. = 0.444 है।

महत्व– ऋण इक्विटी अनुपात की भाँति, यह विनियोजित पूँजी में दीर्घकालिक ऋण के समानुपात को दिखाता है। निम्न अनुपात लेनदारों को सुरक्षा प्रदान करता है तथा उच्च अनुपात प्रबंधन को इक्विटी पर व्यापार में मदद करता है। ऊपर के प्रकरण में ऋण अनुपात आधे से कम है जो ऋण द्वारा उपयुक्त उपलब्धि का संकेत देता है और ऋण के लिए पर्याप्त सुरक्षा भी देता है।

यह भी देखा जा सकता है कि ऋण अनुपात को कुल परिसंपत्तियों के संबंध में भी संगठित किया जा सकता है। तब ऐसे प्रकरण में, यह प्रायः कुल परिसंपत्ति कुल ऋण के अनुपात को संदर्भित करता है (दीर्घ कालिक ऋण + चालू दायित्व) अर्थात् स्थिर एवं चालू परिसंपत्तियों का योग (या अंश धारक निधि + दीर्घकालिक ऋण + चालू दायित्व) इसे इस प्रकार प्रकट किया जाता है

$$\text{ऋण अनुपात} = \frac{\text{कुल ऋण}}{\text{कुल परिसंपत्तियाँ}}$$

5.7.3 स्वामित्व अनुपात

स्वामित्व अनुपात अंशधारक निधि और निवल परिसंपत्तियों के मध्य संबंधों को व्यक्त करता है और इसे निम्नवत परिकलित् किया जाता है

स्वामित्व अनुपात = अंशधारक निधि / पूँजी नियोजित (या निवल परिसंपत्तियाँ)

उदाहरण 7 के आँकड़ों पर आधारित, इसे निम्नवत् किया जाएगा:

5,00,000 रु./9,00,000 रु. = 0.556

महत्व– परिसंपतियों के वित्तीय में अंशधारकों की निधि का उच्च समानुपात एक सकारात्मक विशिष्टता है और जैसा कि इसे भी कुल परिसंपत्तियों से संबंध में संगठित किया जा सकता है। और निवल परिसंपत्तियों के नेतृत्व में लेनदारों को सुरक्षा उपलब्ध कराता है। यहाँ पर यह ध्यान दिया जा सकता है कि कुल ऋण अनुपात और स्वामित्व अनुपात का योग 1 संख्या के बराबर होगा। उदाहरण 7 के आँकड़ों के आधार पर इन अनुपातों को निकालें जहाँ ऋण अनुपात 0.444 तथा स्वामित्व अनुपात 0.556 है और दोनों का योग 0.444 + 0.556 = 1 है। यदि प्रतिशत के रूप में इसे व्यक्त किया जाए तो यह ऋण द्वारा निधि की गई नियोजित पूँजी का 44% और मालिक की निधियों द्वारा 56% बनता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 8

यह एक कंपनी का तुलन पत्र है, ऋण इक्विटी अनुपात को परिकलित कीजिए–

तुलन पत्र

	रु.		रु.
अधिमान अंश पूँजी	2,00,000	संयंत्र एवं मशीनरी	5,00,000
इक्विटी अंश पूँजी	8,00,000	भूमि एवं भवन	4,00,000
आरक्षित	1,10,000	मोटर गाड़ी	1,50,000
ऋण पत्र	1,50,000	फर्नीचर	50,000
चालू दायित्व	1,40,000	स्टॉक	1,00,000
		देनदार	90,000
		रोकड़ एवं बैंक	1,00,000
		अंश निर्गमन पर बट्टा	10,000
	14,00,000		**14,00,000**

हल

इन अनुपातों को उचित प्रकार से समझने के लिए तुलन पत्र को नीचे दिए गए लम्बवत प्रारूप में पुनर्गठित किया गया है।

तुलन पत्र

निधियों के स्रोत:		
अंश धारकों की निधियाँ:		
अधिमान अंश पूंजी	2,00,000	
इक्विटी अंश पूँजी	8,00,000	
आरक्षित	1,10,000	
अंश निर्गमन पर बट्टा	(10,000)	11,00,000
दीर्घकालिक ऋण		
ऋण पत्र	1,50,000	1,50,000
पूँजी विनियोजित		12,50,000
निधियाँ का नियोजन		
स्थिर परिसंपत्तियाँ		
संयंत्र एवं मशीनरी	5,00,000	
भूमि एवं भवन	4,00,000	
मोटर कार	1,50,000	
फर्नीचर	50,0000	11,00,000

© NCERT not to be republished

कुल स्थिर परिसंपत्तियाँ:		
स्टॉक	1,00,000	
देनदार	90,000	
रोकड़ एवं बैंक	1,00,000	
कुल चालू परिसंपत्तियाँ	2,90,000	
घटाया: चालू दायित्व	(1,40,000)	
निवल चालू परिसंपत्तियाँ		1,50,000
निधियों का कुल उपयोजन (निवल परिसंपत्तियाँ)		12,50,000

ऋण इक्विटी अनुपात = दीर्घ कालिक ऋण/ समता

ऋण अनुपात = दीर्घकालिक ऋण/ नियोजित पूँजी

स्वत्वाधिकारी अनुपात = अंश धारक निधि/ नियोजित पूँजी

ऋण इक्विटी अनुपात = 1,50,000 रु. / 11,00,000 रु. = 0.136

ऋण से कुल निधिअनुपात = 1,50,000 रु. / 12,50,000 रु. = 0.12

स्वामित्व अनुपात = 11,00,000 रु. / 12,50,000 रु. = 0.88

यदि ऋण अनुपात तथा स्वामित्व अनुपात कुल परिसंपत्तियों (13,90,000 रु.) पर आधारित हैं तो इन्हें निम्नवत् निकाला जाएगा–

ऋण अनुपात = कुल ऋण/ कुल परिसंपत्तियाँ

= 2,90,000 रु. / 13,90,000 रु. = 0.209

स्वामित्व अनुपात = अंश धारक निधियाँ/ कुल परिसंपत्तियाँ

= 11,00,000 रु. / 13,90,000 रु. = 0.791

5.7.4 कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात

यह अनुपात परिसंपत्तियों के द्वारा दीर्घकालकि ऋण की संरक्षण की व्यापकता को मापता है। इसे इस तरह परिकलित किया जाता है।

ऋण अनुपात हेतु कुल परिसंपत्तियाँ = कुल परिसंपत्तियाँ/ दीर्घकालिक ऋण

उदाहरण 8 से आंकड़े लेकर, इस अनुपात को निम्नवत् निकाला जाएगा–

13,90,000 रु./ 1,50,000 रु. = 9.27 गुणा

उच्च अनुपात यह संकेत देता है कि परिसंपत्तियाँ मूल्यतः स्वामित्व पूँजी से व्यवस्थित है और दीर्घकालिक ऋण पर्याप्त रूप से परिसंपत्तियों से संरक्षित है।

इस अनुपात को संगठित करने के लिए यह ज़्यादा अच्छा है कि कुल परिसंपत्तियों की अपेक्षा निवल परिसंपत्तियों (विनियोजित पूँजी) को लिया जाए। यह पाया गया है कि ऐसे मामले में अनुपात ऋण अनुपात का व्युत्क्रम होगा

महत्व – यह अनुपात मुख्यतः परिसंपत्तियों के वित्त हेतु बाह्य निधियों की दर को संकेत करता है और परिसंपत्तियों द्वारा ऋण के संरक्षण को दर्शाता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 9

निम्नलिखित सूचनाओं से ऋण इक्विटी अनुपात, ऋण अनुपात स्वामित्व अनुपात तथा कुल परिसंपत्तियों पर ऋण अनुपात परिकलित कीजिए।

31 दिसंबर 2005 को तुलन पत्र स्थित

अधिमान अंश पूँजी	1,00,000	स्थिर परिसंपत्तियाँ	4,00,000
समता अंश पूँजी	3,00,000	निवेश	1,00,000
आरक्षित एवं अधिशेष	1,10,000	चालू परिसंपत्तियाँ	2,00,000
सुरक्षित ऋण	1,50,000	प्रारंभिक व्यय	10,000
चालू दायित्व	50,000		
	7,10,000		7,10,000

हल

कुल परिसंपत्तियाँ	=	स्थिर परिसंपत्तियाँ + निवेश + चालू परिसंपत्तियाँ
	=	4,00,000 रु. + 1,00,000 रु. + 2,00,000 रु.
	=	7,00,000 रु.
निवल परिसंपत्तियाँ	=	कुल गैर काल्पनिक परिसंपत्तियाँ – चालू दायित्व
	=	7,00,000 रु. – 50,000 रु. = 6,50,000 रु.
अंशधारक निधियाँ	=	अधिमान अंश + समता अंश + आरक्षित एवं अधिशेष – प्रारंभिक व्यय
	=	1,00,000 रु. + 3,00,000 रु. + 1,10,000 रु. – 10,000 रु. = 5,00,000 रु.
ऋण इक्विटी अनुपात	=	1,50,000 रु. / 5,00,000 रु. = 0.3
ऋण अनुपात	=	1,50,000 रु. / 6,50,000 रु. = 0.23
दीर्घकालिक ऋण	=	1,50,000 रु.
स्वामित्व अनुपात	=	5,00,000 रु. / 6,50,000 रु. = 077%
ऋण अनुपात हेतु कुल परिसंपत्तियाँ	=	7,00,000 रु. / 1,50,000 रु. = 4.67%
	=	1.25.

उदाहरण 10

एक्स लिमिटेड का इक्विटी अनुपात 2:1 है। निम्न से ऋण इक्विटी अनुपात में कौन सा बढ़ेगा, घटेगा या नहीं बदलेगा?

(i) समता अंश के अगले निर्गमन पर

(ii) देनदारों से नकदी प्राप्ति पर

© NCERT not to be republished

(iii) माल का नकद विक्रय
(iv) ऋणपत्रों का मोचन
(v) उधार पर माल का क्रय

हल

अनुपात में परिवर्तन मूल अनुपात पर निर्भर करता है। यदि यह माने कि बाहरी निधियाँ 5,00,000 रु. है और आंतरिक निधियाँ 10,00,000 रु. है। यह ऋण इक्विटी अनुपात को 1:2 दर्शाता है। अब हम ऋण इक्विटी अनुपात पर किए जाने वाले लेनदेन के प्रभाव का विश्लेषण करेंगे।

(क) मान लीजिए 1,00,000 रु. मूल्य के सकता अंश निर्गमित किए गए। यह आंतरिक निधि को बढ़ा कर 11,00,000 रु. बना देगा। अब नया अनुपात 5:11 (50,000/11,00,000 होगा।) इस प्रकार, यह स्थान है कि सकता अंश का अगला निर्गमन ऋण इक्विटी अनुपात को घटाता है।

(ख) देनदार से प्राप्त की गई रोकड़ बाहरी एवं आंतरिक दोनों निधि के अपरिवर्तित छोड़ देगा, चूंकि यह केवल चालू परिसंपत्तियों का प्रभावित करेंगा। इस तरह से, ऋण इक्विटी अनुपात यथानुसार रहेगा।

(ग) इसके साथ ही यह अनुपात को भी अपरिवर्तित रहने देगा।

(घ) मान लीजिए कि 1,00,000 रुपये के ऋण पत्र शोधित किए जाते हैं, यह दीर्घकालिक ऋण को 40,00,000 रु. कम कर देगा। अब नया अनुपात 4:10 (4,00,000/ 10,00,000) होगा। इस तरह ऋण पत्रों का शोधन ऋण समता अनुपात को घटा देगा।

(च) यह भी अनुपात को अपरिवर्तित रहने देगा।

5.7.5 ब्याज व्याप्ति अनुपात

यह वह अनुपात है जो ऋणों पर ब्याज की सेवाओं से निपटान करता है। यह दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज की सुरक्षा का मापक है। यह ब्याज के भुगतान हेतु उपलब्ध लाभ और देय ब्याज की राशि के बीच संबंध को दर्शाता है। इसे निम्नवत् परिकलित किया जाता है:

ब्याज व्यप्ति अनुपात = निवल लाभ - ब्याज व कर देने से पूर्व/
दीर्घकालिक ऋणों पर ब्याज

महत्त्व - यह ब्याज के लिए उपलब्ध लाभ द्वारा संरक्षित दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज के (कितने) गुना को प्रकट करता है। एक उच्च अनुपात के लिए अधिशेष की को सुनिश्चित बनाता है।

उदाहरण 11

निम्नलिखित विवरणों से ब्याज संरक्षण अनुपात परिकलित कीजिए–
कर के पश्चात लाभ 60,000 रु.: 15% दीर्घकालिक ऋण 10,0000 रु. : और कर दर 40%

not to be republished © NCERT

हल

कर के पश्चात निवल लाभ	= 60,000 रु.
कर दर	= 40%
कर से पूर्व निवल लाभ	= कर के पश्चात निवल लाभ × 100/(100 - कर दर)
	= 60,000 रु. × 100/(100-40)
	= 1,00,000 रु.
दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज	= 15% 10,00,00 रु. = 1,50,000 रु.
ब्याज व कर से पूर्व निवल लाभ	= कर से पूर्व निवल लाभ + ब्याज
	= 1,00,000 रु. + 1,50,000 रु. = 2,50,000 रु.
ब्याज संरक्षण अनुपात	= कर एवं ब्याज से पूर्व निवल लाभ/दीर्घकालिक ऋण पर ब्याज
	= 2,50,000 रु. /1,50,000 रु.
	= 1.67 गुणा

5.8 क्रियाशीलता (आवर्त) अनुपात

आर्वत अनुपात आधारभूत रूप से अधिक विक्रय अथवा आर्वत के लिए व्यवसाय की क्षमता को क्रियाशीलता स्तर के संबंध में दर्शाता है। क्रियाशीलता अनुपात उपयोग में लायी गयी परिसंपत्तियों के गुणा को व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि परिसंपतियों का वह संघटक जो एक लेखा अवधि के दौरान विक्रय में परिवर्तित हुआ है। उच्च आर्वत अनुपात का मतलब परिसंपत्तियों का बेहतर उपयोग है और यह अच्छी कार्यक्षमता और लाभदायिकता को दर्शाता है। इस वर्ग में आने वाली कुछ महत्वपूर्ण क्रियाशीलता अनुपात इस प्रकार हैं।

1. स्टॉक आर्वत अनुपात
2. देनदार (प्राप्य) आर्वत अनुपात
3. लेनदार (देय) आर्वत अनुपात
4. निवेश (निवल परिसंपत्तियाँ) आर्वत अनुपात
5. स्थिर परिसंपतियाँ आर्वत अनुपात
6. कार्यशील पूँजी आर्वत अनुपात

5.8.1 स्टॉक आवर्त अनुपात

स्टॉक आर्वत अनुपात यह निर्धारित करता है कि एक लेखा अवधि के दौरान स्टॉक विक्रय में परिवर्तित हुआ है। यह अनुपात बेचे गये माल की लागत और स्टॉक के मध्य संबंध को व्यक्त करता है इसके परिकलन का सूत्र इस प्रकार है।

स्टॉक आवर्त अनुपात = बेचे गए माल की लागत/औसत स्टॉक

जहाँ, औसत स्टॉक प्रारंभिक और अंतिम स्टॉक के गणितीय औसत की और संकेत करता है। और बेचे गए माल की लागत का मतलब विक्रय राशि में से घटाई गई सकल लाभ की राशि से है।

© NCERT not to be republished

महत्त्व – यह अनुपात तैयार माल के स्टॉक का विक्रय में परिवर्तन की नित्यता को आंकता है। यह वर्ष के दौरान क्रय अथवा प्रतिस्थापित हुए स्टॉक के आर्वतन का अध्ययन करता है। निम्न स्टॉक आर्वत अप्रचलित स्टॉक या गलत क्रय के कारण होता है और खतरनाक संकेत है। उच्च आर्वत अच्छा संकेत होता है किन्तु इसकी व्याख्या में सर्तकता बरती जाती है चूँकि उच्च अनुपात लघु मात्रा में माल के क्रय अथवा शीघ्र नकद प्राप्ति हेतु कम मूल्य पर माल बेचने पर भी आ सकता है। अतः यह माल के स्टॉक के उपयुक्त उपयोग पर प्रकाश डालता है।

स्वयं जाँचिये–2

(i) अनुपातों के निम्न वर्ग प्रमुख रूप से जोखिम की गणना करते हैं:
- (अ) द्रवता, क्रियाशीलता और लाभप्रदता
- (ब) द्रवता, क्रियाशीलता और समान स्टॉक
- (स) द्रवता, क्रियाशीलता और ऋण
- (द) क्रियाशीलता, ऋण और लाभप्रदता

(ii) __________ अनुपात प्रमुख रूप से प्रत्याय की गणना करते हैं:
- (अ) द्रवता
- (ब) क्रियाशीलता
- (स) ऋण
- (द) लाभप्रदता

(iii) एक व्यवसायिक फर्म की __________ की गणना उसकी लघु कालीन देयताओं के भुगतान की क्षमता से किया जाता है।
- (अ) क्रियाशीलता
- (ब) द्रवता
- (स) ऋण
- (द) लाभप्रदता

(iv) __________ अनुपात विभिन्न खातों के विक्रय अथवा रोकड़ में परिवर्तन की तीव्रता के सूचक हैं।
- (अ) क्रियाशीलता
- (ब) द्रवता
- (स) ऋण
- (द) लाभप्रदता

(v) द्रवता के दो आधारभूत माप है।
- (अ) स्टॉक आर्वत और चालू अनुपात
- (ब) चालू अनुपात और द्रवता अनुपात
- (स) सकल लाभ सीमान्त और प्रचालन अनुपात
- (द) चालू अनुपात और औसत संग्रहण अवधि

(vi) __________ द्रवता का सूचक है जो कि समान्यतः न्यूनतम तरल परिसंपत्ति को बाहर कर देता है।
- (अ) चालू अनुपात, देनदार
- (ब) तरल अनुपात, देनदार
- (स) चालू अनुपात, स्टॉक
- (द) तरल अनुपात, स्टॉक

© NCERT not to be republished

उदाहरण 12

निम्नलिखित जानकारी (सूचना) से, स्टॉक के आवर्त को परिकलित कीजिए।

प्रारंभिक स्टॉक	18,000	मजदूरी	14,000
अंतिम स्टॉक	22,000	विक्रय	80,000
क्रय	46,000	आंतरिक ढुलाई	4,000

हल

स्टॉक आवर्त अनुपात	=	बेचे गये माल की लागत/औसत स्टॉक
बेचे गये माल की लागत	=	प्रारंभिक स्टॉक + क्रय – अंतिम स्टॉक + प्रत्यक्ष व्यय
	=	18,000 रु. + 46,000 रु. – 22,000 रु.+ (14,000 रु.+ 4,000 रु.)
	=	60,000 रु.
औसत स्टॉक	=	प्रारंभिक स्टॉक + अंतिम स्टॉक/ 2
	=	(18,000 + 22,000)/ 2 = 20,000 रु.
स्टॉक आवर्त अनुपात	=	60,000 रु. / 20,000रु.
	=	3 गुणा

उदाहरण 13

निम्नलिखित सूचना से स्टॉक आवर्त अनुपात का परिकलन करें विक्रय 4,00,000 रु. औसत स्टॉक 55,000 रु. सकल हानि अनुपात 10%।

हल

विक्रय	=	4,00,000 रु.
सकल हानि	=	4,00,000 रु. का 10% = 40,000 रु.
बेचे गये माल की लागत	=	बेचे गये माल की लागत + सकल हानि
		4,00,000 रु. + 40,000 रु. = 4,40,000 रु.
स्टॉक आवर्त अनुपात	=	बेचे गये माल की लागत / औसत स्टॉक
	=	4,40,000 रु. / 55,000 रु. = 8 गुणा

उदाहरण 14

एक व्यापारी औसतन 40,000 रु. का स्टॉक रखता है। उसका स्टॉक आवर्त 3 गुना है। यदि वह माल को 20% लाभ से बेचता है तो लाभ की राशि ज्ञात करें।

© NCERT not to be republished

हल

स्टॉक आवर्त अनुपात	= बेचे गये माल की लागत/औसत स्टॉक
	= बेचे गये माल की लागत/ 40,000 रु.
बेचे गये माल की लागत	= $40{,}000 \times 8$
	= 3,20,000 रु.
विक्रय	= बेचे गये माल की लागत × 100/80
	= $3{,}20{,}000 \times 100/80$
	= 4,00,000 रु.
सकल लाभ	= बिक्री – बेचे गये माल की लागत
	= 4,00,000 रु. – 3,20,000 रु. = 80,000 रु.

स्वयं करें

1. सकल लाभ की राशि ज्ञात करें:

औसत स्टॉक	=	80,000 रु.
स्टॉक आवर्त अुनपात	=	6 गुना
विक्रय मूल्य	=	25% लागत से ऊपर

2. स्टॉक आवर्त अनुपात ज्ञात करें

वार्षिक विक्रय	=	2,00,000 रु.
सकल लाभ	=	बेचे गये माल की लागत 20%
प्रारंभिक स्टॉक	=	38,500 रु.
अंतिम स्टॉक	=	41,500 रु.

5.8.2 देनदार आवर्त अनुपात

यह अनुपात उधार विक्रय और देनदारों के मध्य संबंध को व्यक्त करता है। इस निम्न प्रकार से परिकलित किया जाता है।

देनदार आवर्त अनुपात = निवल उधार विक्रय/ औसत देनदार

जहाँ औसत देनदार = (प्रारंभिक देनदार एवं प्राप्य विपत्र + अंतिम देनदार और प्राप्य विपत्र)/2

यहाँ यह ध्यान योग्य है कि संदिग्ध ऋणों के लिए कोई प्रावधान से पूर्व देनदार को राशि ली जाए। *महत्व*– किसी फर्म की द्रवता स्थिति देनदारों से वसूली की तीव्रता पर निर्भर करती है। यह अनुपात एक लेखांकन अवधि में प्राप्यो आवर्त के गुणा और नकदी परिवर्त्तन की ओर संकेत करता है। यह अनुपात औसत वसूली अवधि की गणना में भी सहायक होता है, जिसका परिकलन अवधि वर्ष में दिनों की संख्या/देनदार आवर्त अनुपात द्वारा किया जाता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 15

निम्नलिखित सूचना से देनदार आवर्त अनुपात का परिकलन कीजिए–

कुल विक्रय	=	4,00,000 रु.
नकद विक्रय	=	20%
1.1.2004 को देनदार	=	40,000 रु.
31.12.004 को देनदार	=	1,20,000 रु.

हल

औसत देनदार	=	(40,000 रु. + 1,20,000 रु.)/2 = 80,000 रु.
निवल उधार विक्रय	=	कुल विक्रय – नकद विक्रय
	=	4,00,000 रु. – 80,000 रु. (20% का 4,00,000 रु.)
	=	3,20,000 रु.
देनदार आवर्त अनुपात	=	निवल उधार विक्रय / औसत देनदार
	=	3,20,000 रु. /80,000 रु.
	=	4 गुणा

5.8.3 देय आवर्त अनुपात

देय आवर्त अनुपात लेनदारों एवं देय विपत्रों के भुगतान के ढंग की ओर संकेत देता है। चूँकि देयताएँ उधार क्रय से अर्जित होती हैं, यह अनुपात उधार क्रय और देय विपत्रों के बीच के संबंधों को दर्शाता है। इसके परिकलन का सूत्र इस प्रकार है।

लेनदार आवर्त अनुपात	=	निवल उधार क्रय/औसत देयताएँ
जहाँ औसत देयताए	=	(प्रारंभिक लेनदार और देय विपत्र + अंतिम लेनदार और देय विपत्र)/2

महत्व–यह अनुपात औसत भुगतान अवधि को व्यक्त करता है। निम्न अनुपात पूर्तिकर्ताओं द्वारा दीर्घकालीन ऋण अवधि अथवा पूतिकर्ताओं को भुगतान में विलंम्ब प्रदर्शित करता है जो कि एक अच्छी नीति नहीं है और व्यवसाय की प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है। औसत भुगतान अवधि की गणना अवधि वर्ष में दिनों की संख्या/लेनदार आवर्त अनुपात सूत्र से की जाती है।

उदाहरण 16

निम्नलिखित आँकड़ों से लेनदार के आवर्त अनुपात का परिकलन कीजिए–

		रु.
2005 के दौरान उधार क्रय	=	12,00,000
देय खाते (लेनदार + देय विपत्र) पर 1.1.2005	=	4,00,000
देय खाते (लेनदार + देय विपत्र) पर 31.12.2005	=	2,00,000

© NCERT not to be republished

हल

औसत लेनदार	=	(4,00,000 रु. + 2,00,000 रु.)/2
	=	3,00,000 रु.
लेनदार आवर्त अनुपात	=	निवल उधार खरीद/ औसत देय खाते
	=	12,00,000 रु. /3,00,000 रु.
	=	4 गुणा

उदाहरण 17

निम्नलिखित सूचनाओं से परिकलित करें–

(i) देनदार आवर्त अनुपात
(ii) औसत वसूली (संचय) अवधि
(iii) देय आवर्त अनुपात
(iv) औसत भुगतान अवधि

प्राप्त आँकड़े:

	रु.
विक्रय	8,75,000
लेनदार	90,000
प्राप्य विपत्र	48,000
देय विपत्र	52,000
क्रय	4,20,000
देनदार	59,000

हल

(i) देनदार आवर्त अनुपात $= \dfrac{8,75,000 \text{ रु.}}{59,000 \text{ रु.} + 48,000 \text{ रु.}}$

= 8.18 गुणा

एक औसत को परिकलित करने के क्रम में, यह आँकड़ों से विभाजित नहीं की गई है। चूंकि वर्ष के प्रारंभ में देनदार और प्राप्य विपत्रों के आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए जब वर्ष के अंत के आकड़े प्राप्त हो तो उसे यथानुसार उपयोग करें।

(ii) औसत वसूली अवधि $= \dfrac{365}{\text{देनदार आवर्त अनुपात}}$

$= \dfrac{365}{8.18}$

= 45 दिन

© NCERT not to be republished

(iii) देय आवर्त अनुपात $= \dfrac{\text{क्रय}}{\text{औसत लेनदार}}$

$= \dfrac{\text{क्रय}}{\text{लेनदार + देय बिल}}$

$= \dfrac{4,20,000 \text{ रु.}}{90,000 \text{ रु.} + 52,000 \text{ रु.}}$

$= \dfrac{4,20,000\text{रु.}}{1,42,000\text{रु.}}$

= 3 गुणा

(iv) औसत भुगतान अवधि $= \dfrac{365}{\text{देय आवर्त भुगतान}}$

$= \dfrac{365}{3}$

= 122 दिन

5.8.4 निवेश (निवल परिसंपत्तियाँ) आवर्त अनुपात

यह अनुपात विक्रय और विनियोजित पूँजी के मध्य संबंध को व्यक्त करता है। उच्च आवर्त बेहतर द्रवता और लाभप्रदता दर्शाता है। इसका परिकलन निम्न प्रकार किया जाता है।

निवेश (निवल परिसंपत्तियाँ) आवर्त अनुपात = निवल विक्रय/विनियोजित पूँजी

पूँजी आवर्त, जो कि विनियोजित पूँजी आवर्त का अध्ययन करती है (निवल परिसंपत्तियाँ), का अतिरिक्त विश्लेषण निम्नवत् दो आवर्त अनुपातों द्वारा किया जाता है।

(अ) स्थायी परिसंपत्तियाँ आवर्त = निवल विक्रय/निवल स्थायी परिसंपत्तियाँ

(ब) कार्यशील पूँजी आवर्त = निवल विक्रय/कार्यशील पूँजी

महत्व – उच्चय आवर्त विनियोजित पूँजी कार्यशील पूँजी और स्थायी परिसंपत्तियाँ अच्छे संकेत हैं। तथा संसाधनों का कार्यकुशल उपयोग से संबंधित हैं। विनियोजित पूँजी का उपयोग अथवा इसके किसी भी घटक को आवर्त अनुपात व्यक्त करता है। उच्चतर आवर्त कार्यक्षम के अयोग को प्रदर्शित करता है। जिसके परिणामस्वरूप व्यवसाय उच्च द्रवता और लाभप्रदता को लाभ प्राप्त होता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 18

निम्नलिखित सूचना से (i) निवल परिसंपत्ति आवर्त (ii) स्थायी परिसंपत्ति आवर्त (iii) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात ज्ञात करें।

	(रु.)		(रु.)
अधिमान अंश पूँजी	4,00,000	संयत्र एवं मशीनरी	8,00,000
समता अंश पूँजी	6,00,000	भूमि एवं भवन	5,00,000
सामान्य आरक्षित	1,00,000	मोटर कार (गाड़ी)	2,00,000
लाभ एवं हानि खाता	3,00,000	फर्नीचर	1,00,000
15% ऋण पत्र	2,00,000	स्टॉक	1,80,000
14% ऋण	2,00,000	देनदार	1,10,000
लेनदार	1,40,000	बैंक	80,000
देय विपत्र	50,000	रोकड़	30,000
बकाया व्यय	10,000		

वर्ष 2005 के लिए विक्रय 30,00,000 रु.

हल

विक्रय = 30,00,000 रु.

विनियोजित पूँजी = अंश पूँजी + आरक्षित एवं अधिशेष + दीर्घकालिक ऋण (या निवल परिसंपत्तियाँ)

= (4,00,000 रु. + 6,00,000 रु.) + (1,00,000 रु. + 3,00,000 रु.) + (2,00,000 रु. + 2,00,000 रु.)

= 18,00,000 रु.

स्थिर परिसंपत्तियाँ = 80,00,000 रु. + 5,00,000 रु. + 20,000 रु. + 10,000 रु.

= 16,00,000 रु.

कार्यशील पूँजी = चालू परिसंपत्तियाँ – चालू दायित्व

= 4,00,000 रु. – 2,00,000 रु. = 2,00,000 रु.

निवल परिसंपत्ति आवर्त अनुपात = 30,00,000/18,00,000 रु. = 1.67 गुणा

स्थिर परिसंपत्ति आवर्त अनुपात = 30,00,000/16,00,000 रु. = 1.88 गुणा

कार्यशील पूँजी आवर्त = 30,00,000/2,00,000 रु. = 15 गुणा

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिये- 3

(i) उधार एवं संचय नीतियों के मूल्यांकन में _________ उपयोगी है।

(क) औसत भुगतान अवधि

(ख) चालू अनुपात

(ग) औसत वसूली अवधि

(घ) चालू परिसंपत्ति आवर्त

(ii) एक _________ फर्म की क्रियाशीलता को मापता है–

(क) औसत वसूली अवधि

(ख) स्टॉक आवर्त

(ग) द्रवता अनुपात

(घ) चालू अनुपात

(iii) _________ अनुपात संकेत दे सकता है कि फर्म *स्टॉक आऊट* तथा विक्रय न होना (लॉस्ट सेल्स) की स्थिति में है।

(क) औसत भुगतान अवधि

(ख) स्टॉक आवर्त

(ग) औसत वसूली अवधि

(घ) द्रवता अनुपात

(vi) ऐ बी सी कंपनी ने अपने उपभोक्ताओं को उधार हेतु 45 दिन की अवधि बढ़ाई है। उस स्थिति में इसे खराब उधार वसूली माना जाएगा यदि उसकी औसत वसूली अवधि होती–

(क) 30 दिन

(ख) 36 दिन

(ग) 47 दिन

(घ) 57 दिन

(v) विशेष रूप से औसत भुगतान अवधि में दिलचस्पी रखते हैं, चूँकि यह उन्हें देय भुगतान ढ़ांचे की सूचना देता है–

(क) उपभोक्ता

(ख) अंशधारी

(ग) ऋणदाता एवं आपूर्तिकर्ता

(घ) ऋणदाता एवं क्रेता

(vi) अनुपात फर्म की दीघ्रकालीन प्रचालनों के संदर्भ में आलोचनात्मक सूचनाएँ देते हैं–

(क) द्रवता

(ख) क्रियाशीलता

(ग) ऋण शोधन क्षमता

(घ) लाभप्रदता

not to be republished © NCERT

5.9 लाभ प्रदता अनुपात

लाभ प्रदता या वित्तीय निष्पादन मुख्यत: आय विवरण में संक्षेपीकृत किया जाता है। लाभ प्रदता अनुपात का परिकलन एक व्यवसाय की अर्जन क्षमता के विश्लेषण के लिये किया जाता है। जोकि व्यवसाय में नियोजत संसाधनों के उपयोगिता के परिणामस्वरूप होता है। यहाँ पर लाभ और दक्षता या साधकता जोकि व्यवसाय में नियोजित संसाधनों का उपयोग है के बीच एक निकट संबंध है। व्यवसाय की लाभप्रदता को विश्लेषित किए जाने हेतु सामान्य तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले अनुपात ये हैं–

1. सकल लाभ अनुपात
2. प्रचालन अनुपात
3. प्रचालन लाभ अनुपात
4. निवल लाभ अनुपात
5. निवेश पर प्रत्याय (ROI) अथवा नियोजित पूँजी प्रत्याय (ROCE);
6. निवल संपत्ति पर प्रत्याय
7. प्रति अंश अर्जन
8. प्रति अंश पुस्तक मूल्य
9. लाभांश भुगतान अनुपात
10. मूल्य अर्जन अनुपात

5.9.1 सकल लाभ अनुपात

विक्रय पर प्रतिशत के रूप में सकल लाभ की गणना सकल सीमान्त जानने हेतु की जाती है। इसे ज्ञात करने का सूत्र है।

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \text{सकल लाभ}/\ \text{निवल विक्रय} \times 100$$

महत्त्व– यह विक्रय उत्पादों पर सकल सीमान्त की ओर संकेत करता है। यह अनुपात प्रचालन व्ययों, अप्रचालन व्ययों आदि की व्यवस्था के लिए उपलब्ध सीमान्त को इंगित करता है। सकल लाभ अनुपात में परिवर्तन विक्रय राशि अथवा विक्रय की लागत अथवा दोनों के सम्मिश्रण से परिवर्तित हो सकता है। निम्न अनुपात प्रतिकूल क्रय और विक्रय नीति को इंगित करता है। इसकी व्याख्या ध्यानपूर्वक की जानी चाहिये क्योंकि स्टॉक मूल्यांकन इसकी गणना को प्रभावित करता है। उच्च सकल लाभ अनुपात अच्छा संकेत है।

उदाहरण 19

वर्ष 2005 के लिए निम्न सूचना उपलब्ध है, सकल लाभ अनुपात की गणना करें।

		रु.
विक्रय	नकद	25,000
	उधार	75,000
क्रय :	नकद	15,000
	उधार	60,000
आंतरिक ढुलाई		2,000

© NCERT not to be republished

वेतन	25,000
स्टॉक में कमी	10,000
बाह्यय वापसी	2,000
मजदूरी	5,000

हल

विक्रय	= नकद विक्रय + उधार विक्रय
	= 25,000 रु. + 75,000 रु. = 1,00,000 रु.
निवल खरीद	= नकद क्रय + उधार क्रय – बाह्यय ढुलाई
	= 15,000 रु. + 60,000 रु. – 2,000 रु. = 73,000 रु.
विक्रय की लागत	= क्रय + (प्रारंभिक स्टॉक – अंतिम स्टॉक) + प्रत्यक्ष व्यय
	= क्रय + सटॉक में कमी (गिरावट) + प्रत्यक्ष व्यय
	= 73,000 रु. + 10,000 रु. + (2,000 रु. + 5,000 रु.) = 90,000 रु.
सकल लाभ	= विक्रय – बेचे गये माल की लागत = 1,00,000 रु. – 90,000 रु. = 10,000 रु.
सक्ल लाभ अनुपात	= सकल लाभ/ निवल विक्रय × 100
	= 10,000/1,00,000 × 100
	= 10%

5.9.2 प्रचालन अनुपात

इस अनुपात की गणना विक्रय की तुलना में प्रचालन लागत के विश्लेषण हेतु की जाती है। इसका गणना सूत्र है।

प्रचालन अनुपात- (विक्रय लागत + प्रचालन व्यय)/ निवल विक्रय × 100

प्रचालन व्ययों में कार्यालय व्यय, प्रशासनिक व्यय, विक्रय व्यय तथा वितरण व्यय शामिल हैं।

प्रचालन लागत के निर्धारण में गैर-प्रचालन आय और व्यय जैसे कि परिसंपत्तियों के विक्रय पर हानि ब्याज, भुगतान लाभांश प्राप्ति, आग से हानि, सट्टे से अधिलाभ आदि।

5.9.3 प्रचालन लाभ अनुपात

यह अनुपात प्रचालन सीमान्त को प्रदर्शित करता है। इसकी प्रत्यक्ष अथवा प्रचालन अनुपात के अवशिष्ट के रूप में गणना की जा सकती है।

प्रचालन लाभ अनुपात = 100 – प्रचालन अनुपात

वैकल्पिक रूप से, इसकी गणना निम्न प्रकार की जा सकती है:

प्रचालन लाभ अनुपात = प्रचालन लाभ/ विक्रय × 100

जहाँ प्रचालन लाभ = विक्रय - प्रचालन की लागत

महत्व- प्रचालन अनुपात का गणना विक्रय के संबंध में वित्तीय प्रभार रहित प्रचालन की लागत के संदर्भ में की जाती है। इसका परिणाम ''प्रचालन लाभ अनुपात हैं। यह अनुपात व्यवसाय के निष्पादन के विश्लेषण में सहायक होता है और व्यवसाय के प्रचालन कार्यक्षमता पर प्रकाश डालता है। यह अनुपात अंर्तयर्म और अंतरा फर्म तुलना हेतु उपयोगी है। निम्न प्रचालन अनुपात एक अच्छा संकेत होता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 20

निम्नलिखित सूचनाओं से सकल लाभ अनुपात तथा प्रचालन अनुपात का परिकलन कीजिए

	रु.
विक्रय	3,40,000
बेचे गये माल की लागत	1,20,000
विक्रय व्यय	80,000
प्रशासनिक व्यय	40,000

हल

सकल लाभ = विक्रय – बेचे गये माल की लागत

= 3,40,00 रु. – 1,20,000 रु.

= 2,20,000 रु.

सकल लाभ अनुपात = $\frac{\text{सकल लाभ}}{\text{विक्रय}} \times 100$

= $\frac{2,20,000 \text{ रु.}}{3,40,000 \text{ रु.}}$ ´ 100

= 64.71%

प्रचालन व्यय = बेचे गये माल की लागत + विक्रय व्यय + प्रशासनिक व्यय

= 1,20,000 रु. + 80,000 रु. + 40,000 रु.

= 2,40,000 रु.

प्रचालन अनुपात = $\frac{\text{प्रचालन व्यय}}{\text{निवल लाभ}} \times 100$

= $\frac{2,40,000 \text{ रु.}}{3,40,000 \text{ रु.}}$ ´ 100

= 70.58%

5.9.4 निवल लाभ अनुपात

निवल लाभ अनुपात लाभ में सभी मदें सम्मिलित संकल्पना पर आधारित है। यह प्रचालन एवं गैर–प्रचालन व्ययों और आयों के पश्चात् निवल लाभ का विक्रय के संबंध को प्रदर्शित करता है। इसे निम्न प्रकार से परिकलित किया जाता है।

निवल लाभ अनुपात = निवल लाभ/ विक्रय × 100

सामान्यता निवल लाभ कर के पश्चात् लाभ (PAT) को दर्शाता है।

महत्व– यह अनुपात विक्रय का निवल लाभ सीमान्त के मापन से संबंधित है। यह निवेश पर प्रत्याय की गणना के लिए प्रमुख चर है। यह व्यवसाय की संपूर्ण कार्यक्षमता का प्रदर्शन करता है और निवेशकों के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण अनुपात है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 21

एक कंपनी का सकल लाभ अनुपात 25% है। उधार विक्रय 2,00,000 रु. है और नकद विक्रय कुल विक्रय का 10% है। यदि कंपनी के अप्रत्यक्ष व्यय 59,000 रु. है तो सकल लाभ का परिकलन करें।

हल

नकद विक्रय	=	20,00,000 × 10/90
	=	2,22,222 रु.
इसलिए कुल विक्रय हुई	=	22,22,222. रु.
सकल लाभ =.25 × 22,22,222	=	5,55,555 रु.
निवल लाभ	=	5,55,555 रु. – 50,000 रु.
	=	5,05,555 रु.
निवल लाभ अनुपात	=	विल लाभ/ विक्रय × 100
	=	5,05,555/22,22,222 × 100
	=	22.75%

5.9.5 नियोजित पूँजी अथवा निवेश पर प्रत्याय

यह अनुपात एक व्यावसायिक उद्यम द्वारा निधि के समस्त उपभोग की व्याख्या करता है। नियोजित पूँजी से आश्य व्यवसाय में नियोजित दीर्घकालीक निधि से है जिसमें अंशधारी निधि, ऋणपत्र और दीर्घकालीन ऋण सम्मिलित हैं। वैकल्पिक रूप से नियाजित पूँजी में कुल मूर्त परिसंपित्तयाँ और चालू देयताए शामिल है। इस अनुपात की गणना हेतु लाभ से आश्य ब्याज और कर से पूर्व लाभ (PBIT) से है। अंत: इसे निम्न प्रकार ज्ञात किया जाता है।

निवेश पर प्रत्याय (अथवा नियोजित पूँजी) = ब्याज और कर से पूर्व लाभ/ नियोजित पूँजी × 100

महत्त्व– यह अनुपात व्यवसाय में नियोजित पूँजी पर प्रत्याय का मापक है। यह अंशधारियों, ऋणपत्र धारकों तथा दीर्घकालीन देयताओं के माध्यम से एकत्रित निधि के उपभोग द्वारा व्यवसाय की कार्यक्षमता का प्रदर्शन करता है।

अंतरफर्म तुलना के लिए नियोजित पूँजी पर प्रत्याय अच्छी लाभप्रदता का मापक है। यह अनुपात दर्शाता है कि क्या फर्म भुगतान किये गए ब्याज दर की तुलना में नियोजित पूँजी पर उच्च प्रत्याय अर्जित कर रही है अथवा नहीं।

5.9.6 अंशधारक निधि पर प्रत्याय

यह अनुपात अंशधारकों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है और यह दर्शाता है कि क्या अंशधारकों द्वारा फर्म में किये गए निवेश पर उपयुक्त प्रत्याय अर्जित हो रहा है अथवा नहीं। यह अनुपात का निवेश पर प्रत्याय से अधिक होना चाहिये अन्यथा इसका मतलब है कि कंपनी की निधियों को लाभदायिकतापूर्वक निवेश नहीं किया गया है। अंशधारकों के दृष्टिकोण से लाभप्रदता के बेहतर मापन की गणना कुल अंशधारक निधि पर

© NCERT not to be republished

प्रत्याय को निर्धारित करके की जा सकती है इसे निवल संपत्ति पर प्रत्याय (RONW) भी कहा जाता है। इसकी गणना निम्न प्रकार की जाती है।

$$\text{अंशधारक निधि पर प्रत्याय} = \frac{\text{कर के पश्चात लाभ}}{\text{अंशधारक निधि}} \times 100$$

5.9.7 प्रति अंश अर्जन

इस अनुपात को निम्न प्रकार परिभाषित करते हैं।

प्रति अंश अर्जन (EPS) = इक्विटी अंशधारकों के लिए उपलब्ध लाभ/ समता अंशों की संख्या

इस संदर्भ में अर्जन से आश्य समता अंशधारकों के लिए उपलब्ध लाभ से है जिसकी गणना अधिमान अंशों पर लाभांश को कर के पश्चात लाभ में से घटा कर की जाती है। यह अनुपात भी समता अंशधारकों के दृष्टिकोण के साथ-साथ स्टॉक बाज़ार में अंश मूल्य के निर्धारण हेतु महत्वपूर्ण है। यह अन्य फर्मों के साथ औचित्य एवं लाभांश भुगतान की क्षमता की तुलना के लिए सहायक होता है।

5.9.8 प्रति अंश पुस्तक मूल्य

इस अनुपात को निम्न प्रकार ज्ञात किया जाता है।

प्रति अंश पुस्तक मूल्य = इक्विटी अंशधारक निधि/ इक्विटी अंशों की संख्या

इक्विटी अंशधारक निधि को अधिमान अंश पूँजी में से अंशधारक निधि को घटा कर प्रदर्शित किया जाता है। यह अनुपात भी इक्विटी अंशधारकों के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इनसे अंशधारको को अपनी धारकता का बोध होता है साथ ही यह अनुपात बाज़ार मूल्य को प्रभावित करता है।

5.9.9 लाभांश भुगतान अनुपात

यह अर्जन के समानुपात की ओर संकेत करता है जोकि अंश धारकों के प्रति वितरित किया जाता है। इसे निम्नवत् परिकलित करते हैं-

$$\text{लाभांश भुगतान अनुपात} = \frac{\text{लाभांश प्रति अंश}}{\text{अर्जन प्रति अंश}}$$

यह कंपनी की लाभांश नीति तथा मालिक की निवल संपत्ति में वृद्धि की प्रदर्शित करता है।

5.9.10 मूल्य अर्जन अनुपात

यह अनुपात निम्नानुसार परिभाषित होता है-

मूल्यअर्जन अनुपात = प्रति अंश बाजार मूल्य/ प्रति अंश अर्जन

उदाहरण के लिए, यदि एक्स कंपनी की प्रति अंश अंश अर्जन 10 रु. है और बाजार मूल्य (प्रति अंश) 100 रु. है तो मूल्य अर्जन अनुपात 10 (100/10) होगा। यह फर्म की कमाई में वृद्धि तथा उसके अंश की बाजार मूल्य की तर्कसंगता के बारे में निवेशकों की अपेक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है। पी. ई. अनुपात उद्योग से उद्योग तथा उसी अधीनस्त कंपनी से कंपनी में भिन्नतापूर्ण होता है तथा यह निवेशकों के उसके भावी अवबोधन पर निर्भर करता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 22

निम्नलिखित विवरणों से निवेश पर प्रत्याय को परिकलित कीजिए:

	रु.		रु.
समता अंश पूँजी (10 रु.)	4,00,000	चालू दायित्व	1,00,000
12% अधिमान	1,00,000	अंशों पर बट्टा	5,000
सामान्य आरक्षित	1,89,000	स्थिर परिसंपत्तियाँ	9,50,000
10% ऋणपत्र	4,00,000	चालू परिसंपत्तियाँ	2,34,000

साथ ही अंशधारक निधि पर प्रत्याय, प्रति अंश अर्जन (EPS) प्रति अंश पुस्तक मूल्य और मूल्य और मूल्य अर्जन अनुपात ज्ञात करें यदि अंश का बाज़ार मूल्य 34 रूपये और कर के पश्चात् निवल लाभ 1,50,000 है और कराधान 50,000 रु है।

हल

ब्याज एवं कर से पूर्व लाभ	=	1,50,000 रु. + ऋण पत्र ब्याज + कर
	=	1,50,000 रु. + 40,000 रु. + 50,000 रु. = 2,40,000 रु.
विनियोजित पूँजी	=	समता अंश पूँजी + अधिमान अंश – प्रतिअंश बट्टा
	=	4,00,000 रु. + 1,00,000 रु. + 1,89,000 रु. + 4,00,000 रु. – 5,000 रु. = 10,84,000 रु.
निवेश पर प्रत्याय	=	ब्याज व कर से पूर्व लाभ/विनियोजित पूँजी × 100
	=	2,40,000 रु./10,84,000 रु. × 100 = 22.14%
अंशधारक निधि पर प्रत्याय	=	कर के पश्चात् लाभ/अंशधारक निधि × 100
	=	1,50,000 रु./6,84,000 रु. × 100
	=	13.84%
प्रति अंश अर्जन	=	समता अंश धारकों हेतु उपलब्ध लाभ/इक्विटी अंशों की संख्या
	=	1,38,000 रु./40,000 रु. = 3.45 रु.
इक्विटी अंश धारकों हेतु उपलब्ध लाभ	=	कर के पश्चात लाभ – अधिमान लाभांश
	=	1,50,000 रु. – 12,000 रु. = 1,38,000 रु.
मूल्य अर्जन अनुपात	=	प्रतिअंश बाजार मूल्य/ प्रतिअंश अर्जन
	=	34/3.45
	=	9.86 गुणा
प्रति अंश पुस्तक मूल्य	=	समता अंश धारक निधि/इक्विटी अंशों की संख्या
	=	5,84,000 रु. /40,000 रु. = 14.6 रु.

यहाँ यह ध्यान दिया जा सकता है कि विविध अनुपात एक दूसरे से परस्पर संबंधित होते हैं। कई बार दो या दो से अधिक अनुपात की सम्मिश्रित जानकारी दी होती है और कुछ अज्ञात आँकड़ों को परिकलित करना होता है। ऐसी परिस्थिति में अज्ञात आँकड़ों को पता करने में अनुपातों को सूत्र सहायक होते हैं। (देखें उदाहरण 23 व 24)

© NCERT not to be republished

प्रदर्श 2

यूनीचेन लेबोरैटोरीज लिमिटेड

मुख्य अनुपात

मार्च 31 को	**2002**	**2003**	**2004**	**2005**	**2006**
ROCE%	29.40	25.80	27.20	27.90	27.80
RONW%	31.20	22.80	25.10	24.50	23.70
EVA (रु. मिलियन में) आर्थिक अतिरिक्त मूल्य	230.10	167.60	250.00	257.80	449.30
प्रति अंश आंकड़े					
EPS (रु.)	36.30*	31.75*	12.98	13.22	23.84
लाभांश	80%	80%	60%	70%	100%
प्रति अंश पुस्तक मूल्य (रु.)	115.70	138.50	44.30	53.55	83.50

प्रदर्श 3

ग्रसिम इंडस्ट्रीस लिमिटेड

अनुपात और संख्यकी

PBIDT सीमान्त	(%)	24.0	28.7	28.9	24.7	20.8	20.2	17.3	17.9	20.0	22.9
ब्याज संरक्षण (PBIDT कर/ब्याज)	(×)	12.55	9.61	7.88	5.60	4.48	3.56	2.84	2.28	2.56	2.57
ROACE (PBIT/Avg.CE)	(%)	18.5	23.1	20.9	16.2	12.9	13.5	10.5	10.1	13.1	15.0
RONE (PAT/Avg. NW)	(%)	18.6	22.3	23.7	12.9	11.7	14.4	8.6	6.6	10.4	13.5
ऋण इक्विटी अनुपात	(×)	0.40	0.46	0.57	0.70	0.76	0.76	0.82	0.93	0.92	0.98
प्रतिअंश लाभांश	Rs./Sh.	20.00	16.00	14.00	10.00	9.00	8.00	7.00	6.75	6.75	6.50
प्रतिअंश अर्जन	Rs./Sh.	94	97	85	40	33	41	25	18	32	38
प्रतिअंश नकद अर्जन	Rs./Sh.	123	130	116	85	72	67	51	41	55	56
प्रति अंश पुस्तक मूल्य	Rs./Sh.	543	472	393	324	295	271	303	285	320	296

प्रदर्श 4

एशियन पेन्टस इण्डिया लिमिटेड

	APIL		**AP ग्रुप (समेकित)**	
	2004-05	*2003-04*	*2004-05*	*2003-04*
PBDIT/विक्रय	16.8%	17.2%	14.4%	14.8%
EOI इसे पूर्व PBT विक्रय	14.2%	14.0%	11.2%	10.9%
PAT/विक्रय	8.9%	8.7%	6.8%	6.5%
औसत पर प्रत्याय विनियोजित पूँजी (ROCE)	41.5%	37.7%	34.6%	31.4%
औसत निवल संपित्त पर प्रत्याय (RONW)	31.4%	29.3%	31.7%	28.8%
EPS प्रति अंश अर्जन (रु.)	18.53	16.12	18.15	15.11
ऋण: समता	0.15:1	0.13:1	0.38:1	0.28:1
ब्याज व्याप्ति (PBIT ब्याज)	101	46	28	17

मार्च 31, 2005 को विनियोजित पूँजी और निवल संपत्ति की राशि हानि के समायोजन के पश्चात है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण 23

निम्नलिखित जानकारियों से एक कंपनी की चालू परिसंपत्तियों का परिकलन करें:

स्टॉक आवर्त अनुपात	= 4 गुना

अंतिम स्टॉक जो प्रारंभिक स्टॉक से दोगुना से अधिक है।

विक्रय 3,00,000 रु. और सकल लाभ अनुपात विक्रय की 20% है।

चालू देनदारियाँ	= 40.00 रु.
तरल अनुपात	= .75.

हल

बेचे गए माल की लागत	=	विक्रय – सकल लाभ
	=	3,00,000 रु. – (3,00,00 × 20%)
	=	3,00,000 रु. – 60,000 रु.
	=	2,40,000 रु.
स्टॉक आवर्त अनुपात	=	बेचे गये माल की लागत/ औसत स्टॉक
	=	2,40,000/4 = 60,000 रु.
औसत स्टॉक	=	प्रारंभिक स्टॉक + अंतिम स्टॉक/ 2
60,000	=	(प्रारंभिक स्टॉक + प्रारंभिक स्टॉक + 20,000)/2
60,000	=	प्रारंभिक स्टॉक + 10,000 रु.
प्रारंभिक स्टॉक	=	50,000 रु.
प्रारंभिक स्टॉक	=	70,000 रु.
तरल अनुपात	=	तरल परिसंपत्तियाँ/ चालू दायित्व
.75	=	तरल परिसंपत्तिया/40,000 रु.
तरल परिसंपत्तियों	=	40,000 रु. × .75 = 30,000 रु.
चालू परिसंपत्तियाँ	=	तरल परिसंपत्तियाँ + अंतिम स्टॉक
	=	30,000 रु. + 70,000 रु. = 1,00,000 रु.

उदाहरण 24

चालू अनुपात है 2.5:1 चालू परिसंपत्तियाँ हैं 50,000 रु. और चालू दायित्व हैं 20,000 रु. अनुपात 2:1 लाने के लिए चालू परिसंपत्तियों में निश्चित रूप से कितनी कमी लानी चाहिए।

हल

चालू दायित्व	= 20,000 रु.
2:1 अनुपात के लिए, चालू परिसंपत्तियाँ निश्यित रूप से 2 × 20,000	= 40,000 रु.
चालू परिसंपत्तियों का वर्तमान स्तर	= 50,000 रु.
अनिवार्य गिरावट	= 50,000 – 40,000 रु.
	= 10,000 रु.

© NCERT not to be republished

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

1. अनुपात विश्लेषण
2. तरल अनुपात
3. ऋण शोधन क्षमता अनुपात
4. क्रियाशीलता अनुपात
5. लाभप्रदता अनुपात
6. निवेश पर प्रत्याय (ROI)
7. तुलन परिसंपत्ति
8. निवल संपत्ति (अंशधारक निधि)
9. निवल संपत्ति पर प्रत्याय (RONW)
10. औसत वसूली अवधि
11. प्राप्य
12. आवर्त अनुपात
13. क्षमता अनुपात
14. लाभांश भुगतान

सारांश

1. *वित्तीय विवरणों का विश्लेषण:* उपयोग कर्ताओं को आवश्यक अतिरिक्त (मूल्य) उपयोगिता उपलब्ध कराने हेतु यह मूल लेखांकन का एक आंतरिक या अभिन्न हिस्सा है।

2. *अनुपात विश्लेषण:* वित्तीय विवरण विश्लेषण का एक महत्त्वपूर्ण साधन अनुपात विश्लेषण है। लेखांकन अनुपात दो लेखांकन संख्याओं के बीच संबंध का प्रतिनिधत्व करते हैं।

3. *अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य:* अनुपात विश्लेषण का उद्देश्य व्यवसाय की लाभप्रदता, द्रवता, ऋणशोधन क्षमता तथा सक्रियता स्तर के गहन विश्लेषण का उपलब्ध कराता है।

4. *अनुपात विश्लेषण के लाभ:* अनुपात विश्लेषण कई लाभ प्रदान करता है जिसमें वित्तीय विवरण विश्लेषण, निर्णय की सुसाध्यता समझने में मदद जटिल आँकड़ों सरलीकरण करने तथा संबंध स्थापित करने, तुलनात्मक विश्लेषण के सहायक के रूप में, समाचा क्षेत्र की पहचान तथा स्टॉक (SWOT) विश्लेषण के योग्य बनाता है। इसके साथ विभिन्न तुलनाएं प्रदान करता है।

5. *अनुपात विश्लेषण की सीमाएं :* अनुपात विश्लेषण की कई होती हैं। कुछ एक लेखांकन आंकड़ों पर आधारित मूल सीमाओं के कारण होती हैं जिन पर यह आधारित होते हैं। अनुपात विश्लेषण की अन्य समान सीमितताओं में रूढ़ियाँ या परंपरागत शामिल है। पहले समूह में ऐतिहासिक विश्लेषण, मूल्या परिवर्तन स्तरों की उपेक्षा, गुणात्मक उपेक्षा या गैर-मौद्रिक (मुद्रात्मक) पहलू लेखांकन आँकड़ों की सीमाएं लेखांकन पद्धतियों (प्रथाओं) की विभिन्नताएं तथा पूर्वानुमान शामिल हैं, दूसरे समूह में माध्यम एवं अंत न होना, समस्या हल न कर पाने की क्षमता का अभाव, तथा असंबद्ध आँकड़ों के बीच अनुपात जैसे घटक शामिल हैं।

6. *अनुपातों के प्रकार:* यहाँ पर अनेक प्रकार के अनुपात जैसे कि द्रवता, ऋण शोधन क्षमता, सक्रियता एवं लाभ प्रदता अनुपात हैं। द्रवता अनुपात के अंतर्गत चालू अनुपात तथा साखनिर्धारण अनुपात सम्मिलित होता है। ऋण शोधन क्षमता का परिकलन व्यवसाय की इस क्षमता निर्धारण हेतु किया जाता है। कि वह लधुकालिक ऋणों की अपेक्षा दीर्घकालिक ऋणों की सेवाएं पूरी कर पाएगा या नही। इसके अंतर्गत ऋण अनुपात कुल परिसंपत्ति एवं ऋण अनुपात, स्वामित्व अनुपात तथा ब्याज संरक्षण अनुपात शामिल होता हैं आवर्त अनुपात व्यवसाय द्वारा की गई अधिक विक्रय या आवर्त की क्षमता द्वारा विशिष्टीकृत सक्रियता स्तर

© NCERT not to be republished

को प्रदर्शित करता है और इसमें स्टॉक आवर्त, देनदार आवर्त, देनदार आवर्त, कार्य पूँजी आवर्त, स्थिर परिसंपत्ति आवर्त तथा चालू परिसंपत्ति आवर्त शामिल हैं। लाभप्रदता अनुपात व्यवसाय की अर्जन क्षमता के विश्लेषण हेतु किया जाता है जोकि व्यवसाय में नियोजित संसाधनों को उपयोगिता का परिणाम होता है। अन्य अनुपातों के अंतर्गत सकल लाभ अनुपात, प्रचालन अनुपात, निवल लाभ अनुपात, निवेश (पूँजी विनियोजित) पर प्रत्याय, प्रतिअंश अर्जन, पुस्तक मूल्य प्रतिअंश तथा मूल्य अर्जन अनुपात आते हैं।

अभ्यास हेतु प्रश्न

क. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अनुपात विश्लेषण से आप का क्या तात्पर्य है?
2. विविध प्रकार के अनुपात क्या हैं?
3. अध्ययन से इनका क्या संबंध स्थापित होगा–
   (क) स्टॉक आवर्त
   (ख) देनदार आवर्त
   (ग) देय आवर्त
   (घ) कार्यशील पूँजी आवर्त
4. जब एक पंसारी/ परचून स्टोर का विश्लेषण करते हैं तो वहाँ माल सूची आवर्त अनुपात एक बीमा कंपनी की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण क्यों होगा।
5. एक व्यावसायिक फर्म की द्रवता उसकी दीर्घकालिक दायित्व के समय आने पर भुगतान हेतु उसकी क्षमता की संतुष्टि हेतु मापी जाती है। टिप्पणी कीजिए।
6. एक माल सूची की औसत आयु फर्म के द्वारा पास रखने (धारण) औसत दीर्घावधि के रूप में देखी जाती है या माल सूची में बिक्री के औसत दिनों की संख्या के रूप में देखते हैं। व्यख्या करें।

ख. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वित्तीय अनुपात विश्लेषण के उपयोगकर्ता कौन हैं? उनके लिए अनुपात विश्लेषण के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।
2. द्रवता अनुपात क्या है? चालू एवं तरल अनुपात के महत्त्व की चर्चा कीजिए।
3. आप एक फर्म की ऋणशोधन क्षमता की अध्ययन कैसे करेंगे?
4. लाभप्रदता अनुपात का क्या महत्त्व है। इन्हें कैसे पता किया जाता है।
5. वित्तीय अनुपात विश्लेषण विश्लेषकों के चार समूहों द्वारा आयोजित किए जाते हैं प्रबंधक, इक्विटी निवेशक दीर्घकालिक लेनदार तथा लघु कालिक देनदार इन सभी समूहों द्वारा अनुपात मूल्यांकन करने हेतु प्रत्येक का अपना-अपना मूल उद्देश्य क्या है?
6. चालू अनुपात समग्र द्रवता का बेहतर माप केवल तभी उपलब्ध कराता है जब एक फर्म की माल सूची आसानी से रोकड़ में न परिवर्तित हो सके। यदि मालसूची तरल है तो समग्र द्रवता के मापन हेतु तरल अनुपात एक प्राथमिकता है। व्याख्या कीजिए।

© NCERT not to be republished

संख्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित तुलन पत्र 31 मार्च 2006 पर रोहित एंड कं. का है।

दायित्व	*राशि* रु.	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि* रु.
अंश पूँजी	1,90,000	स्थिर परिसंपत्तियाँ	1,53,000
आरक्षित	12,500	स्टॉक	55,800
लाभ व हानि	22,500	देनदार	28,800
देय विपत्र	18,000	बैंकस्थ रोकड़	59,400
लेनदार	54,000		
	2,87,000		**2,87,000**

चालू अनुपात परिकलित करें
(**उत्तर** चालू अनुपात 2:1)

2. 31 मार्च 2006 पर निम्न तुलन पत्र टाइल मशोन लि. का है।

दायित्व	*राशि* रु.	*परिसंपत्तियाँ*	*राशि* रु.
समता अंश पुँजी	24,000	भवन	45,000
8% ऋण पत्र	9,000	स्टॉक	12,000
लाभ व हानि	6,000	देनदार	9,000
बैंक अधिविकर्ष	6,000	हस्तस्थ रोकड़	2,280
लेनदार	23,400	पूर्वदत्त व्यय	720
कराधान हेतु प्रावधान	600		
	69,000		**69,000**

चालू अनुपात तथा तरल अनुपात परिकलित कीजिए।
(**उत्तरः** चालू अनुपात 8:1 तरल अनुपात 37:1)

3. चालू अनुपात 3:5 है। कार्य पूँजी 9,00,000 रु. है। चालू परिसंपतियों तथा चाूल दायित्व की राशि परिकलित करें।
(**उत्तर**: चालूपरिसंपत्तियाँ 1,26,000 रु. एवं चालू दायित्व 36,000 रु.)

4. शाइन लिमिटेड का चालू अनुपात 4.5:1 एवं तरल अनुपात 3:1 है। यदि स्टॉक 36,000 है तो चालू दायित्व एवं चालू परिसंपत्तियाँ परिकलित करें।
(**उत्तरः** चालू दायित्व 1,80,000 रु., चालू परिसंपत्तियाँ 24,000 रु.)

5. एक कंपनी की चालू दायित्व 75,000 रु. है, यदि चालू अनुपात 4:1 है तथा तरल अनुपात 1:1 है तो चालू परिसंपत्तियों, तरल अनुपात एवं स्टॉक का मूल्य परिकलित कीजिए।
(**उत्तर** चालू परिसंपत्तियाँ 3,00,000 रु., तरल अनुपात 75,000 रु., तथा स्टॉक 2,25,000 रु. है)

© NCERT not to be republished

6. हांडा लिं. का स्टॉक 20,000 रु. है, कुल तरल परिसंपत्तियाँ 1,00,000 रु. है। और तरल अनुपात 2:1 है। चालू अनुपात परिकलित कीजिए।
(**उत्तरः** चालू अनुपात 2:4:1)

7. निम्नलिखित जानकारी से ऋण इक्विटी अनुपात परिकलित कीजिए–

कुल परिसंपत्तियाँ	15,00,000
चालू दायित्व	6,00,000
कुल ऋण	12,00,000

(**उत्तरः** ऋण इक्विटी अनुपात 2:1)

8. चालू अनुपात परिकलित करें, यदि, स्टॉक 6,00,000 रु. है। तरल परिसंपत्तियाँ 24,00,000 रु. है। तरल अनुपात 2:1
(**उत्तरः** चालू अनुपात 2.5:1)

9. निम्नलिखित सूचना से स्टॉक आवर्त अनुपात परिकलित करें–

निवल विक्रय	2,00,000
सकल लाभ	50,000
अंतिम स्टॉक	60,000
प्रारंभिक स्टॉक पर अंतिम स्टॉक का आधिक्य	20,000

(**उत्तर** स्टॉक आवर्त अनुपात 3 गुणा)

10. निम्नलिखित जानकारी से निम्न अनुपात परिकलित कीजिए–
(i) चालू अनुपात (ii) साख निर्धारण अनुपात, (iii) प्रचालन अनुपात (iv) सकल लाभ अनुपात

चालू परिसंपत्तियाँ	35,000
चालू दायित्व	17,500
स्टॉक	15,000
प्रचालन व्यय	20,000
विक्रय	60,000
बेचे गए माल की लागत	30,000

(**उत्तरः** चालू अनुपात 2:1, तरल अनुपात 1.14:1, प्रचालन अनुपात 83.3%, सकल लाभ अनुपात 50%)

11. निम्नलिखित जानकारी से परिकलित करें।
(i) सकल लाभ अनुपात (ii) स्टॉक आवर्त अनुपात (iii) चालू अनुपात तरल अनुपात (v) निवल लाभ अनुपात (vi) कार्यशील पूँजी अनुपात

विक्रय	25,20,000
निवल लाभ	3,60,000
बेचे गए माल की लागत	19,20,000
लेनदार	9,00,000
औसत स्टॉक	8,00,000
चालू परिसंपत्तियाँ	7,60,000

© NCERT not to be republished

स्थिर परिसंपत्तियाँ	14,40,000
चालू दायित्व	6,00,000
ब्याज व कर से पूर्व निवल लाभ	8,00,000

(**उत्तर:** सकल लाभ अनुपात 23.81; स्टॉक आवर्त अनुपात 2.4 गुना, चालू अनुपात 2.6:1; तरल अनुपात 1.27:1; निवल लाभ अनुपात 14.21% कार्य पूँजी अनुपात 2.625 गुना)

12. निम्न जानकारी से सकल लाभ अनुपात, कार्यपूँजी आवर्त अनुपात ऋण इक्विटी अनुपात तथा स्वामित्व अनुपात परिकलित कीजिए–

प्रदत पूँजी	5,00,000
चालू परिसंपत्तियाँ	4,00,000
निवल विक्रय	10,00,000
13% ऋण पत्र	2,00,000
चालू दायित्व	2,80,000
बेचे गए माल की लागत	6,00,000

(**उत्तर:** सकल लाभ अनुपात 40% कार्य पूँजी अनुपात 8.33 गुना ऋण इक्विटी अनुपात 2:5; स्वामित्व अनुपात 25:49)

13. स्टॉक आवर्त अनुपात परिकलित कीजिए, यदि
प्रारंभिक स्टॉक 76,250 रु., अंतिम स्टॉक 98,500 रु. है, विक्रय 5,20,000 रु. है। विक्रय वापसी 20,000 रु. है। क्रय 3,22,250 रु. है।
(**उत्तर:** स्टॉक आवर्त अनुपात 3.43 गुना)

14. नीचे दिए गए आँकड़ों से स्टॉक आवर्त अनुपात परिकलित कीजिए।

वर्ष के प्रारंभ में स्टॉक	10,000
वर्ष के अंत में स्टॉक	5,000
ढुलाई	2,500
विक्रय	50,000
क्रय	25,000

(**उत्तर:** स्टॉक आवर्त अनुपात 4.33 गुना)

15. एक व्यापारिक फर्म का औसत स्टॉक 20,000 रु. (लागत) है। यदि स्टॉक आवर्त अनुपात 8 गुना है और फर्म विक्रय पर 20% लाभ पर माल बेचती है, तो फर्म का लाभ सुनिश्चित कीजिए।
(**उत्तर:** लाभ 40,000 रु.)

16. आप एक कंपनी की दो वर्ष की निम्न सूचनाएँ एकत्र कर सकते हैं:

	2004	*2005*
01 अप्रैल को देनदार	4,00,000	5,00,000
30 मार्च को देनदार		5,60,000
31 मार्च को व्यापारिक स्टॉक	6,00,000	9,00,000
विक्रय (25 % के सकल लाभ पर)	3,00,000	24,00,000

स्टॉक आवर्त अनुपात तथा देनदार आवर्त अनुपात परिकलित कर यदि वर्ष 2004 में स्टॉक 2,00,000 रु. बढ़ गया है।
(**उत्तर:** स्टॉक आवर्त अनुपात 2.4 गुणा, देनदार आवर्त अनुपात 4.53 गुणा।)

© NCERT not to be republished

17. निम्न तुलन पत्र एवं अन्य सूचनाओं से निम्नलिखित अनुपातों का परिकलन कीजिए:
(i) ऋण इक्विटी अनुपात (ii) कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात (iii) देनदार आवर्त अनुपात

दायित्व	राशि रु.	परिसंपत्ति	राशि रु.
सामान्य आरक्षिति	80,000	प्रारंभिक व्यय	20,000
लाभ एवं हानि	1,20,000	रोकड़	1,00,000
ऋण @15%	2,40,000	स्टॉक	80,000
देय विपत्र	20,000	प्राप्य विपत्र	40,000
लेनदार	80,000	देनदार	1,40,000
अंश पूँजी	2,00,000	स्थिर परिसंपत्तियाँ	3,60,000
	7,40,000		**7,40,000**

(**उत्तर:** ऋण इक्विटी अनुपात 12:19; कार्य पूँजी आवर्त 1.4 गुना, देनदार आवर्त 2 गुणा)

18. मार्च 31, 2007 को निम्नलिखित जानकारी निगम लिमिटेड की लाभ व हानि खाता तथा तुलन पत्र का सारांश है:

व्यय/ हानियाँ	राशि (रु.)	आगम/ लाभ	राशि (रु.)
प्रारंभिक स्टॉक	50,000	विक्रय	4,00,000
क्रय	2,00,000	अंतिम स्टॉक	60,000
प्रत्यक्ष व्यय	16,000		
सकल लाभ	1,94,000		
	4,60,000		4,60,000
वेतन	48,000	सकल लाभ	1,94,000
फर्नीचर के विक्रय पर हानि	6,000		
निवल लाभ	1,40,000		
	1,94,000		**1,94,000**

मार्च 31, 2007 को निगम लिमिटेड का तुलन पत्र

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
लाभ व हानि	1,40,000	स्टॉक	60,000
लेनदार	1,90,000	भूमि	4,00,000
समता अंश पूँजी	2,00,000	रोकड़	40,000
बकाया व्यय	70,000	देनदार	1,00,000
	6,00,000		**6,00,000**

© NCERT not to be republished

परिकलित करें–

(i) तरल अनुपात

(ii) स्टॉक आवर्त अनुपात

(iii) निवेश पर प्रत्याय

(**उत्तर:** तरल अनुपात 7:13:, स्टॉक आवर्त अनुपात 3.74 गुणा; निवेश पर प्रत्याय 41.17%)

19. निम्न के आधार पर परिकलित करें (क) ऋण इक्विटी अनुपात (ख) कुल परिसंपत्तियों का ऋण से अनुपात (ग) स्वामित्व अनुपात

समता अंश पूँजी	75,000
अधिमान अंश पूँजी	25,000
सामान्य आरक्षित	50,000
संचित लाभ	30,000
ऋणपत्र	75,000
विविध लेनदार	40,000
बकाया व्यय	10,000
प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन	5,000

(**उत्तर:** ऋण इक्विटी अनुपात 3:7; कुल परिसंपत्तियों का ऋण से ऋण अनुपात 4:1; स्वामित्व अनुपात 7:12)

20. बेचे गए माल की लागत 1,50,000 रु. है, प्रचालन व्यय 60,000 रु. है, विक्रय 2,60,000 रु. है, एवं विक्रय प्रतिफल 10,000 रु. है, प्रचालन अनुपात का परिकलन कीजिए।
(**उत्तर:** प्रचालन अनुपात 84%)

21. वर्ष के अंत 31 मार्च 2007 पर निम्न संक्षिप्त लेनदेन एवं लाभ व हानि खाता है तथा भावी वर्ष का तुलन पत्र है।

व्यय/ हानियाँ	राशि (रु.)	राजस्व/ लाभ	राशि (रु.)
प्रारंभिक स्टॉक	5,000	विक्रय	50,000
क्रय	25,000	अंतिम स्टॉक	7,500
प्रत्यक्ष व्यय	2,500		
सकल लाभ	25,000		
	57,500		**57,500**
प्रशासनिक व्यय	7,500	सकल लाभ	25,000
ब्याज	1,500		
विक्रय व्यय	6,000		
निवल लाभ	10,000		
	25,000		**25,000**

© NCERT not to be republished

दायित्व	राशि (रु.)	परिसंपत्तियाँ	राशि (रु.)
अंश पूँजी	50,000	भूमि व भवन	25,000
चालू दायित्व	20,000	संयंत्र व मशनरी	15,000
लाभ व हानि	10,000	स्टॉक	7,500
		विविध देनदार	7,500
		प्राप्य विपत्र	6,250
		हस्तस्थ व बैंकस्थ रोकड़	8,750
		फर्नीचर	10,000
	80,000		**80,000**

परिकलित करें– (i) सकल लाभ अनुपात (ii) चालू अनुपात (iii) तरल अनुपात (iv) स्टॉक आवर्त अनुपात (v) स्थिर परिसंपत्ति आवर्त अनुपात

(**उत्तर :** (i) सकल लाभ अनुपात 50% (ii) चालू अनुपात 3:2 (iii) तरल अनुपात 1.125:1 (iv) स्टॉक आवर्त अनुपात 4 गुणा, (v) स्थिर परिसंपत्ति आवर्त अनुपात 1:1)

22. निम्नलिखित सूचना से परिकसित करें– सकल लाभ अनुपात, स्टॉक आवर्त अनुपात, तथा लेनदार आवर्त अनुपात

विक्रय	3,00,000
बेचे गये माल की लागत	2,40,000
अंतिम स्टॉक	62,000
सकल लाभ	60,000
प्रारंभिक स्टॉक	58,000
देनदार	32,000

(**उत्तर:** सकल लाभ अनुपात 20%; स्टॉक आवर्त अनुपात 4 गुणा; देनदार आवर्त अनुपात 9.4 गुणा)

प्रयोजना कार्य

प्रयोजना–1

अपनी पसंद की दो र्निमाण कंपनियों की वेबसाइट में जाकर इस अध्याय में परिचचित किए गए अनुपात का तुलनात्मक अध्याय तैयार करें। आपको विश्लेषण में निश्चित रूप से कम से कम पिछले तीन वर्ष सम्मिलित होने चाहिए।

प्रयोजना–2

रिलाएंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड की उनकी अपनी वेबसाइट से नवीनतम वित्तीय विवरण डाउनलोड करें और पिछले पाँच वर्षों हेतु लाभप्रदता अनुपात विश्लेषण तैयार करें।

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिये हेतु जाँच सूची

स्वयं जाँचिये– 1

(i) असत्ये (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य (v) सत्य (vi) असत्य

स्वयं जाँचिये– 2

(i) द (ii) ख (iii) ख (iv) क (v) ख (vi) द

स्वयं जाँचिये– 3

(i) ग (ii) ख (iii) क (iv) ग (v) ग (vi) ग

© NCERT not to be republished